व्दितीय - अध्याय

द्वितीय अध्याय

भगवतीचरण वर्मा और उनके सामाजिक उपन्यास -

प्रेमचंदोत्तर कालीन हिन्दी के सामाजिक उपन्यासकारों में भगवतीचरण वर्माजी का विशेष योगदान रहा । वस्तुतः भगवतीचरण वर्मा उपन्यास के क्षेत्र में सन 1928 ई.में. 'पतन' इस ऐतिहासिक उपन्यास से अवतरित हुए थे । तब से लेकर सन 1981 ई. तक उनका लेखन कार्य अथक परिश्रम से जारी था, जिसके अंतर्गत उन्होंने सन 1885 ई. से मरणोपरांत तक की समय की परिधि में सामाजिक जीवन की झलकियाँ प्रस्तुत की हैं । उन्होंने अपने उपन्यासों में स्वातंत्रता प्राप्ति के बाद की तथा उसके पूर्व की सामाजिक जीवन में बढ़ते हुए अविश्वास और बढ़ती हुई कटुता का समग्र रूप से चित्रण किया है । 'चित्रलेखा', 'तीन वर्ष', 'टेढ़े मेढ़े रास्ते', 'आखिरी दाँव', 'अपने खिलौने', 'भूले बिसरे चित्र', 'वह फिर नहीं आई', 'सामर्थ्य और सीमा', 'थके पाँव', 'सीधी सच्ची बाते', 'सबहि नचावत राम गोसाई' तथा 'प्रश्न और मरीचिका' आदि उनके समस्या प्रधान उपन्यास है । जिनके अंतर्गत सामाजिक पृष्ठभूमि की परिधि में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक समस्याओं का सूत्रपात्र किया है । उनके कई उपन्यासों में सामाजिक समस्याओं की बाढ़ सी आई हुई प्रतीत होती है ।

वस्तुतः प्रत्येक कलाकार समाज की परिधि में रहता है और उसका नीरीक्षण, परीक्षण करके उसे चित्रित करने का प्रयास करता है । यह निर्विवाद सत्य है कि साहित्य कौनसा भी क्यों न हो वह मानव जीवन की रमणीय अनुभूति है । "साहित्य का पहला अंग है भाव, जिसके लिए कल्पना अपेक्षित है, परंतु कल्पना ऐसी जो अनुभूति के आधार पर निमित्त हो ।"[1] स्पष्ट है उपन्यास के द्वारा यथार्थ अनुभूति ही प्रकट होती है और जिसके अंतर्गत हृदय को स्पंदित करने की शक्ति होती है । दूसरी बात यह है कि मनुष्य चेतनशील प्राणी है और उसकी वह चेतनशक्ति समाज सापेक्ष होती है न कि निरपेक्ष । यही मानव चेतना भगवतीचरण वर्मा में प्रचुर मात्रा में मौजूद थी, जिसकी सहायता से सामाजिक परिधि में रहकर अनुभूति की आग की लपेटें में जलकर इस महान साहित्यकार ने अपनी वाणी के माध्यम से अमृत की वर्षा की है ।

भगवतीचरण वर्माजी का उपन्यास साहित्य क्षेत्र विशाल है और उसमें कई सामाजिक समस्याओं को चित्रित किया गया है । उन समस्याओं को चित्रित करते समय भगवती बाबू पर जिन घटनाओं का प्रभाव पड़ा था, उनका संक्षेपमें उल्लेख करना उचित होगा ।

उन्नीसवी तथा बीसवी शताब्दी का भारतीय समाज नाना रूढी परंपरा, रीति - रिवाज तथा धर्म आदि कतिपय बुराइयों से उब गया था । खान - पान, विवाह, रहन - सहन, अंधविश्वास आदि प्रथाओं में कठोर बंधन थे, जिससे मानव जीवन सिसकियाँ ले रहा था । इसी युग में पुरोहित वर्ग का अंधविश्वास जैसी कुप्रथाओं से लाभ हो रहा था, तो दूसरी ओर सामान्य जनता बवंडर की चक्की में पिसती जा रही थी । उन सबसे मुक्ति पाने के लिए सामाजिक क्षेत्र में परिवर्तन की आवश्यकता थी । परिवर्तन की आवश्यकता को पहचानकर इसी युग में समाज सुधारकों ने इस क्षेत्र में कार्य करना शुरू किया । बद्लती हुई इस स्थिति को देखकर साहित्यकार डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी ने कहा है कि "1920 ई. भारतवर्ष के लिए युगांतर ले आनेवाला वर्ष है ।" [2] स्वामी दयानंद सरस्वती ने भी इसी वर्ष में सामाजिक क्षेत्र में आप्त वाक्य को प्रमाण मान कर उद्‌घोषित किया था कि "भारत वर्ष मानो दीर्घ निद्रा के बाद उठकर नवीन आलोक की ओर देख रहा था, कभी उसके मन में संदेह का उदय होता था, कभी आशा का संचार होता था । हर नई वस्तु को देखने के बाद वह एक बार अपनी पुरानी याददाश्त पर जोर डाल देता था, वह जान लेना चाहता कि जो कुछ वह नया देख रहा है, वह पुराने अनुभवों के विरूद्‌ध है ।" [3] स्पष्ट है कि इस समय सामाजिक क्षेत्र में परिवर्तन लाने के हेतु कतिपय मनिषियोंने अपना योगदान दे दिया था ।

इस युग में जिन सामाजिक संस्थाओं तथा समाज सुधारको ने सामाजिक क्षेत्र में परिवर्तन लाने का प्रयत्न किया था । वे हैं - राज राममोहन राय की 'ब्रहम समाज' संस्था, स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा स्थापित 'आर्य समाज' संस्था, न्या.रानडे जी का 'प्रार्थना समाज', स्वामी रामकृष्ण परमहंस की 'रामकृष्ण मिशन', डॉ. एनी बेझंट की 'थियोसोफिक सोसायटी' आदि संस्थाएँ तथा उनके संस्थापकों ने सामाजिक क्षेत्र में परिवर्तन लाने का हेतु क्रांति कर दी । इसका प्रभाव भगवती बाबूजी के साहित्यिक व्यक्तित्व पर पडते बिना नहीं रहा । इसके अलावा महात्मा गांधी जैसे महान मानवतावादी व्यक्तिमत्व का प्रभाव भी तत्कालीन साहित्यकारों पर पडे बिना नहीं रहा ।

भगवती बाबू पर उपर्युक्त संस्थाएँ तथा महात्मा गांधी के व्यक्तित्व का प्रभाव तो था ही, साथ ही साथ उस युग के साहित्यकार - सुमित्रानंदन पंत, पं. कृष्णकांत मालवीय, 'निराला', रामकुमार वर्मा, विक्रमादित्य सिंह, श्रीनाथ सिंह, ज्योति प्रसाद तथा उपन्यास सम्राट मुन्शी प्रेमचंद आदि कवि तथा लेखकों और उनकी रचनाओं का प्रभाव भगवती बाबू पर पडते बिना नहीं रहा । उन्होंने खुद लिखा भी है - "राजकुमार वर्मा मुझसे एक कक्षा पीछे थे लेकिन कविता के क्षेत्र में तेजी से उभर रहे थे । भगवान सहाय विज्ञान के विद्यार्थी थे, जिन्हे साहित्य और कला से असीम अनुराग था - वह मेरे क्लास फैलो थे । अत्यंत शिष्ट और सरल - एक तरह का भोलापन । जब कि राजकुमार स्वंय कलाकार होते हुए भी - अपने अहम को किस तरह और किस ढंग से आरोपित करना - जैसे उसका अभ्यास ऊस युवक ने उस समय ही करना आरंभ कर दिया था ।" [4]

स्पष्ट है कि, भगवती बाबूजी का सामाजिक संघटन के प्रति लगाव था, एक प्रकार की अस्मिता थी । जिससे वे समाज के निकटतम पहुँचे थे । उन्होंने समाज की छोटी - छोटी इकाइयाँ को सोच - समझकर अपने उपन्यास साहित्य में अंकित किया है ।

भगवती बाबू की अपनी खास विशेषता रही है कि अपने साहित्य के माध्यम से समाज में फैली हुई समस्याओं को अंकित करना और उनका निवारण करने के हेतु उपाय ढूँढना । उन्होंने भी खुद कई समस्याओ का तथा आर्थिक संघर्ष का सामना किया था, और अंत तक वे संघर्ष के साथ जूझते भी रहे । उनके द्वारा हल की गई सामाजिक समस्याओं के अंतर्गत कई सामाजिक समस्याएँ है, जिनके कारण समाज व्यवस्था खोखली बन चुकी थी । समस्त मानव जाति के जीवन का संतुलन बिगड गया था । अतः उन समस्त समस्याओं को ही वर्माजी ने अपने उपन्यासों का विषय बनाया है । प्रेमचंद जी ने जिन समस्याओं को उठाया था, उन्ही को ही भगवती बाबू ने भी, उठाया हैं, किंतु प्रेमचंद की अपनी अलग विशेषता रही है और भगवती बाबू की भी ।

वस्तुतः भगवती बाबू सामाजिक उपन्यासकार हैं । उन्हें प्रेमचंद परंपरा का उपन्यासकार माना जाता है । भगवती बाबू के उपन्यासो में सामाजिक उद्देश्य के कारण उन्हें प्रेमचंद की प्रतिछबि

भी कहा जाता है । वर्माजी का प्रत्येक उपन्यास समस्या प्रधान है । उन्होने भारतीय समाज के परिवर्तनों को निकटता से देखा परखा और अपने उपन्यासों के द्वारा एक शतक वर्षो के सामाजिक जीवन और परिवर्तनशील मानवी मूलयों की गाथा को मार्मिक ढंग से चित्रित किया है । सन 1947 ई. के पूर्व की सामाजिक समस्या ओं का चित्रण उनके 'तीन वर्ष', 'टेढ़े मेढ़े रास्ते', 'भूले बिसरे चित्र' तथा 'आखिरी दाँव' आदि उपन्यासों में मिलता है, तो स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद का चित्रण 'प्रश्न और मरिचिका', 'सबहि नचावत राम गोसाई'', 'सीधी सच्ची बातें' तथा 'सामर्थ्य और सीमा' में मिलता है । 'वह फिर नहीं आई' जैसे लघु उपन्यास में वर्माजी ने देश विभाजन से निर्मित शरणार्थी समस्या का चित्रण किया है । 'थके पाँव' और 'अपने खिलौने में सामाजिक समस्याओं को परिवारिक घरातल पर अंकित किया है । अतः वर्माजी ने जिन सामाजिक समस्याओं को उठाया है, उनका संक्षेप में विवेचन करना आवश्यक है, जिससे उन्हें सामाजिक उपन्यासकार के कोटि में रखना आसान हो जाएगा ।

वर्ण व्यवस्था - वर्ण व्यवस्था जैसी सामाजिक संघटना का चित्रण भगवती बाबू के सामाजिक उपन्यासों मे प्रचुर मात्रा देख़ने को मिलता है । वर्ण भेद पर आधारित समाज की अभिव्यक्ति उनके उपन्यासों में देखने को मिलती है । मध्यमयुगीन भारत में भारत का सामाजिक संगठन वर्ण व्यवस्था पर ही आश्रित था, किंतु औद्योगिक क्रांति ने आर्थिक क्षेत्र में परिवर्तन लाया था । खुदकी सुविधा के अनुसार मनुष्य अर्थ प्राप्ति की लिप्सा से अपने परिवेश से दूर नगरों में आकर्षित होने लगा । वहाँ जाकर भी वह परंपरागत जाति भेद, वर्ण व्यवस्था आदि बंधनो मे जकडकर बैठ न सका । इसका संकेत 'आखिरी दाँव' में चमेली और रामेश्वर के माध्यम से दिया है । विजातीय जाति की चमेली जब रामेश्वर का खाना पकाने के लिए संकोच करती है तब रामेश्वर चमेली से कहता है - "हूँ ! तो तू समझती है कि मैं तेरे हाथ का पकाया खाऊँगा नाही ! ------ देख, बंबई में खाने पीने के मामले में सिर्फ एक जात होती है - वह है आदमी की । वहाँ मुसलमान के होटल की चाय पीनी पडती है ।" [5] यहाँ रामेश्वर का यह कथन मुस्लिम समाज के साथ वर्णभेद की भावना से ही प्रकट हुआ है ।

भगवतीचरण वर्माजी की द्रुष्टिने वर्ण व्यवस्था जैसी कु प्रथा को पहचान लिया था । अतः उन्होंने समाज तथा धर्म में जो विकृतियाँ थी उनका प्रखरता के साथ विरोध किया है । इसी युग में सामाजिक बहिष्कार की भावना जोर पकड रही थी । फिर भी अगर किसी को मुक्ति पानी थी

उसको प्रायश्चित करना पडता था । इसका चित्रण 'टेढ़े मेढ़े रास्ते' मे मिलता है उमानाथ जब जर्मनी से वापस लौटता है, तब उसके पिता रमानाथ तिवारी सामाजिक बहिष्कार से मुक्ति पाने के हेतु उसके सामने प्रायश्चित का प्रयोजन रखता है । उमानाथ जब रमानाथ के साथ सभ्यगण के सामने जाता है तब सभ्यगण विवाद में व्यस्त रहा हुआ दिखाई देता है । उनको उमानाथ इस प्रयोजन का स्वीकार करेगा या नहीं इस बात को लेकर संदेह हो रहा था । तभी उमानाथ भी तुरंत बोल उठता है कि "यह सब स्वाँग आप ही को मुबारक रहे ददुआ । ये कुत्ते से भी गए बीते आदमी हमारे घर में आकर हमारा अपमान करें और आप सब कुछ चुपचाप देखते रहे । मुझे आप पर आश्चर्य हो रहा है ।" [6] इससे स्पष्ट होता है कि सामाजिक बहिष्कार जैसी कु प्रथा का पर्दाफाश करना यह भगवती बाबू के मन की क्रांति है, जो उमानाथ के माध्यम से प्रकट हुई हैं । वर्ण व्यवस्था प्रथा का चित्रण 'भूले बिसरे चित्र' तथा 'प्रश्न और मरीचिका' में बहुत ही प्रखर रूप से चित्रित हुआ है । 'भूले बिसरे चित्र' में ज्ञान प्रकाश ऐकडवोकेट को भी विदेश से लौटने के पश्चात प्रायश्चित विधान करने के झंझट से बचने के लिए ज्वालाप्रसाद जी से कहता है, "पहली जनवरी से यहाँ वकालत शुरू कर देनी है ----- । फिर अभी हार जाने में बावेहा खड़ा हो सकता है । विलायत से लौटा हूँ, लोग कहेंगे प्रायश्चित करो, यह करो, वह करो । तो इन झंझटो में कौन पडे जाकर ।"[7] ज्ञानप्रकाश का यह कथन मात्र स्वार्थ प्रवृत्ति के कारण ही मुखरित हो उठा है ऐसा जान पडता है, क्योंकि वह अपने व्यवसाय सूत्रपात को जमाना चाहता है, जाति-बहिष्कृत स्पष्टीकरण मात्र एक बहाना है । वर्माजीने कई जगह पर ऐसे व्यक्ति के खोललेपन की भी खिल्ली उड़ाई है । 'अपने खिलोने' में घर में हर सुबह दो घंटे पूजाः पाठ करनेवाला पूरे - के - पूरे ब्राहमणत्व के संस्कार से युक्त कृष्णन इस पात्र के माध्यम से वर्माजीने वर्ण व्यवस्था के अनुपयोग स्वरूप को हास्य व्यंग्य के रूप में चित्रित किया है । अपनी गोद में जूता रखना भी अच्छी न समझनेवाला कृष्णन अजीब कडुवेपन से कहता है - "जूता - जूता है । मजबूरी से पहना जाता है अगर न पहना जाता तो और भी अच्छा था । इसपर ज्ञानेश्वरी देवी मुस्कराते हुए कहती है - 'आप की जूतों में कई रूचि नहीं होती कृष्णन साहब ।" उस पर कृष्णन उत्तर देता है वह बहुत ही हास्यस्पद है - "मैं ब्राहमण हूँ मिसेज भारती, चमार नहीं हूँ । हमारे कुल में आज तक किसी ने जूता नही पहना । यह तो अपवित्र होता है ।" ----- हाँ जूता मैं पहने हूँ, लेकिन मैं पैर में पहने हूँ । और इसे नौकर ने पहना दिया है, मैंने अपने हाथ से इसे नहीं छुआ । तुमने तो जूता मेरी गोद में रख दिया । मुझे स्नान करना पडेगा ।" [8]

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि वर्माजी में वर्ण व्यवस्था कों उठाकर अमानवीय कृत्यों का विरोध ही किया है । इस प्रकार का चित्रण उनके सामाजिक समस्याओं के उपन्यासों मिलता है ।

अछूत समस्या

प्राचीनतम काल से ही समाज संगठन की आधारशिला वर्ण व्यवस्था रही थी, जिसका आगे चलकर विकृत परिणाम होने लगा, समाज सेवा करनेवाला वर्ग इससे वंचित रहने लगा । उच्च पदों पर ब्राहमण तथा उच्च वर्ण जाति के अधिकारी चूने जाने लगे जिससे निम्न स्तर के समाज को ठेंस पहूँचने लगी वर्ण व्यवस्था की मान्यता के अनुसार ब्राहमण अपने आपको उच्च और में ही सब कुछ हूँ ऐसे विधान करने लगा । जिसके कारण अछूत समस्या जोर पकडने लगी । इस काल मैं जो लोग शक्तिशाली थे उनको छुआ तक नहीं जाता था । वर्माजी ने इस सामाजिक विषमता को अपने उपन्यासो के माध्यम से उभारने का प्रयास किया है । 'सीधी सच्ची बातें' का जसवंत कपूर के माध्यम से इसका यथार्थ चित्रण हुआ है । "हमारे समाज का बौध्दिक नेतृत्व ब्राहमण के हाथ में हे, और अधिकांष ब्राहमण निरामिवभोजी है, हनारा आर्थिक नेतृत्व बनिये के हाथ में है और हमारे देश का बनिया निरामिषभोजी है । और ब्राहमण तथा बनिये की यह अहिंसा ऐसी भयानक हिंसा में बदल गयी है, जिसकी मिसाल दुनिया में नहीं मिलेगी । ----- ब्राहमण सामाजिक शोषण का प्रतिनिधि है बनिया आर्थिक शोषण का प्रतिनिधि है ।" [9] इससे स्पष्ट है कि इस युग के समाज के उच्चभ्रू स्तर के द्वारा प्राचीन भारतीय संस्कृती का विघटन हो रहा था, जिससे सामाजिक नैतिक मूल्य घटता जाता रहा । छुआ - छूत के कारण जाति विभाजन पद्धति जोर पकड़ने लगी । भगवती बाबू ने इस स्थिति को पहचान कर उसे अपने उपन्यासों में चित्रित किया है । 'भूले बिसरे चित्र' में तो पशुओं से भी घृणस्पद व्यवहार इन उच्च वर्गियो ने किस ढ़ंग से किया है इसका प्रमाण है गंगाप्रसाद । गंगाप्रसाद के साथ उठने बैठने की बात तो दूर ही रही, किंतु वह उनको अपने कमरे में प्रवेश तक निषेध मानते हुए गेंदालाल को कहते है - "चमार ! तुम यहाँ, इस कमरे में कैसे घुस आए ? निकलो यहाँ से निकला ।" [10]

अछूत जैसी घृणास्पद प्रथा पर महात्मा गांधी जी के पहले किसी ने कोई ठोस कार्य नहीं किया था, किंतु भगवतीचरण वर्माजी ने गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित होकर इस समस्या को साहित्य

साहत्य के माध्यम से हल करने का प्रयास किया है । **'सीधी सच्ची बातें'** में चौधरी सुखलाल और शिवदुलारी का विवाह आर्य समाज के प्रथा की अनुसार करके हरिजनोध्दार ही किया है । स्पष्ट है की भगवती बाबू जी का इस समस्या की ओर देखने का दृष्टिकोणप्रगतिशील एवं सहानुभूतिपूर्वक रहा था ।

पारिवारिक समस्या -

भगवतीचरण वर्माजी के अधिकांश उपन्यास सामाजिक और राजनीतिक पृष्ठभूमि का आधार लेकर लिखे गए हैं किंतु उसमें पारिवारिक जीवन प्रधान रूप से उभर नहीं सका है । इस पर डॉ. आशा बागडी के विचार उल्लेखनीय है - "कही तो बात विवाह पर अटक जाती है जैसे, **'तीन वर्ष'** और कही विवाह होता है - उदा. **'आखिरी दाँव'** तथा 'वह फिर नहीं आई' । ----- लगभग सभी उपन्यासों में पारिवारिक एक सुत्रता बनाये रखने के लिए स्त्री को आदर्श पतिव्रता के रूप में ही चित्रित किया है, जो पति द्वारा किए गए अत्याचार सहती रही ।" [11] भगवती बाबू के 'टेढ़े मेढ़े रास्ते' तथा 'भूले बिसरे चित्र' मे पारिवारिक समस्या की सुंदर झलकियाँ देखने को मिलती है ।

सामान्यतः परिवार के दो प्रकार होते है एक संयुक्त और दो विभक्त । परिवार में वर्ग भेद होने के कारण है नौकर पेशे में वृध्दि, औद्योगिक क्षेत्र में क्रांति, नगरो के प्रति आकर्षण आदि के कारण परिवारिक विघटन होता रहा जिसके कारण परस्पर स्नेह भाव, मिटते जाने लगे । भगवती बाबूजी ने इसके अंतर्गत संयुक्त परिवार के परिवारिक विघटन की समस्या को 'भूले बिसरे चित्र' तथा 'थके पाँव' मे किया है । 'भूले बिसरे चित्र' में आरंभ में ही संयुक्त परिवार का चित्रण मिलता है, जिसके समर्थक है मुन्शी शिवलाल, किंतु अपने भाई राधेलाल की पत्नी का अधिपत्य स्वीकरते है और छिनकी की बातों पर ध्यान न देकर कहते है कि "अदि छोड भी बहू कोई पराई थोडे ही है, घर की मालकिन है, जैसा ठीक समझती है, वैसा करती है ।" [12]इससे स्पष्ट होताहै कि शिवलाल जैसे पात्रों के माध्यम से परिवार को संयुक्त बना रखने का प्रयास किया है, किंतु जब ज्वालाप्रसाद तहसीलदार बनकर फतहपुर से घाटमपुर अपनी पत्नी यमुना को साथ ले चला जाता है । इस प्रकार आगे भी संयुक्त परिवार का विघटन बार-बार होता रहता है । 'थके पाँव' में भी रामचंद्र, केशव और मोहन के द्वारा यही समस्या चित्रित की है ।

विवाह समस्या :

वस्तुतः विवाह के अभाव में पारिवारिक संस्था का समाज में कोई मूल्य ही नहीं रहता है । अतः विवाह समाज व्यवस्था की अत्यंत अनिवार्य व्यवस्था है, फिर भी व्यक्तिगत के रूपमें विवाह करना या न करना यह कोई बंधन नही हैं । मगर इस युगमें युगीन परिवेश के बदलते आयाम के कारण विवाह पद्धति में भी परिवर्तन आ गया है । इसका कारण है, आर्थिक समस्या जिसके कारण इस युग में सामान्य जनता के लिए विवाह करना यह एक समस्या बन गई थी । इस समस्या का चित्रण भगवतीचरण वर्मा के 'थके पाँव' उपन्यास में मिलता है । नाया अपनी आर्थिक विपन्नता को अच्छी तरह से जानती है वह अपनी माँ को कहती है कि "आम्मा मुझे विवाह नहीं करना । देख रही हूँ, तुम्हारी हालात भौजी की हालत, बुआजी की हालत ! विवाह के अर्थ है स्त्री को नरक में ढकेल देना और इस नरक में आप लोग मुझे नहीं ढकेल सकते ।"[13]

विवाह संबंधी अपने विचार 'तीन वर्ष, 'टेढ़े मेढ़े रास्ते', चित्रलेखा', 'भूले बिसरे चित्र' तथा 'आखिरी दाँव' आदि में व्यक्त हुए हैं । एक ओर 'तीन वर्ष' की माया विवाह पद्धति को घृणास्पद दृष्टी से देखती है तो दूसरी ओर 'तीन वर्ष' का अजित विवाह को महत्व देता है और उसे आवश्यक भी समझता है और वह उसे उदारवादी दृष्टीकोन से अपनाना चाहता है, वह कहता है कि "स्त्री को आश्रय देना, उसकी रक्षा करना, यह पुरूष का कर्तव्य है, इसलिए प्रत्येक पुरूष का कर्तव्य समझा गया है कि वह एक स्त्री को आश्रय दे.....। सृष्टि में पुरूष अपूर्ण है, क्योंकि उसके ममत्व पर कोंडीभूत होने के कारण उसमें दया, त्याग, सहानभूति आदि की कोमल भावनाओं का अभाव सा है और साथ ही स्त्री भी अपूर्ण है, क्योंकि उसमें अधिकार वीरता, साहस आदि का अभाव है इसलिए स्त्री पुरूष के मिलने से ही जीवन पूर्ण होता हैं ।"[14] स्पष्ट है कि विवाह के लिए दो अपूर्ण व्यक्तिमत्व का एक हो जाना तब ही कही विवाह तथा वैवाहिक जीवन सफल बनता है अन्यता उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती है ।

इस प्रकार भगवतीचरण वर्माजी ने विवाह जैसी सामाजिक समस्या को अपने उपन्यासों में विशद रूप से चित्रित किया हैं ।

नारी समस्या :

पारिवारिक जीवन में नारी अपने विभिन्न रूपों में अस्तित्व लिए हुए अवतरित रहती है । अतः इस सम्बन्ध में वर्माजी की मान्यता है कि "स्त्री अबला है । प्रत्येक पुरूष का यह कर्तव्य है कि वह एक अबला को आश्रय दे । विवाह व्दाराही पुरूष अबला स्त्री को आश्रय देता है । यदि पुरूष स्त्री को आश्रय न दे, तो स्त्री की दशा शोचनीय हो जाय । इधर पुरूष के सामने भी काफी कठिनाईयों आवें । जिस समय तुम विवाह न करके सन्यास होने की बात सोचते हो, तुम कायरता करते हो । एक अबला को आश्रय देने का तुम्हारा जो कर्तव्य है, उसे तुम विमुख होते हो ।"[15] इससे स्पष्ट है कि प्रत्येक व्यक्ति को सामाजिक संगठन में अपना महत्वपूर्ण सा योगदान देना पड़ता है । यह कथन यहाँ तक ठीक है, किंतु बदलती हुई परिस्थिती की धारा में प्रत्येक युग में एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति की ओर देखने का दृष्टीकोण बदल भी सकता है । जो पुरूष स्त्री को अबला कहता है और उसे आश्रय देने की बातें करता हैं वही युगीन परिवेश में बदल भी सकता है । वर्माजीने अपने युग परिवेश पर चिंतन किया था जिनमें उन्हे नारी विषयक कतिपय समस्या देखने को मिली जिसका यथार्थ अंकन उनकी लेखनी ने न छोडा । नारी विषयक जो समस्याएँ उनके व्दारा प्रकट हुई उनका विवेचन आगे दिया गया है -

दहेज समस्या - दहेज प्रथा युग-युग ने चलती आई हुई बीमारी है और इसका कोई इलाज भी नही है । वह इतनी गहराई तक फैली है कि उसकी जड़ो को उखाड़ देना बहुत ही कठिन हो गया है । आज हम देखते हैं कि इस प्रथा के कारण हररोज कितनी नारियाँ बरबाद होती जा रही है । इस प्रथा का मूल कारण है धन और धन कि लिप्सा प्रत्येकव्यक्ति को होती है । इस प्रथा के कारण नारी को किस ढंग से विवश होना पड़ता है इसका यथार्थ चित्रण 'भूले बिसरे चित्र' की विद्या के व्दारा मिलता है । विद्या का विवाह बीस-हजार दहेज देकर सिध्देश्वरी से किया जाता है । सिध्देश्वरी की आर्थिक स्थिति बहुत ही अच्छी है किंतु वह खुद तथा उसका पिता बिंदेश्वरी प्रसाद दोनों को भी धन की लिप्सा प्रचुर मात्रा है । उनकी इसी लिप्सा के प्रति विद्या कहती है - "मैं अपने ससुरालवालों से घृणा करने लगी हूँ । जिन लोगों ने मेरे घर को तबाह करके रखा है, उनके प्रति मुझमें प्रेम कैसे हो सकता है । उस खानदान का हर आदमी मुझे पिशाच के रूप में

दिखता है ।[16] स्पष्ट है कि भगवती बाबू ने दहेज प्रथा के माध्यम से मनुष्य की पाशवी वृत्तिपर प्रकाश ड़ाला है ।

दहेज प्रथा निम्न मध्यम वर्गीय समाज के लिए शाप ही है । इसका चित्रण 'थके पाँव' में मिलता है । मध्यमवर्गीय परिवारमें पली माया का विवाह जब विधूर डॉक्टर से निश्चित करने का प्रयास किया जाता है तब माया स्पष्ट रूपसे कहती है कि ''मुझे विवाह नहीं करना, अंतिम बार मैं कह देती हूँ ।....... 'आपने मुझे पढ़ा - लिखाकर मनुष्य बनाया है, तो मेरे साथ मनुष्यता का व्यवहार कीजिए ।[17] माया सुशिक्षित युवती है वह अपनी परिस्थिति से परिचित है, किन्तु इस विकृत प्रथा के प्रति वह विद्रोह करने का प्रयत्न करती है ।

इस प्रकार भगवती बाबूने अपने उपन्यासों से विद्या, माया आदि नारी पात्रों के माध्यम्से दहेज प्रथा समस्या चित्रित करके इस प्रथा की जड़ उखाड़ देनी चाहिए इसकी ओर संकेत ही किया है ।

विधवा समस्या :

इस समस्या के अंतर्गत भगवतीचरण वर्माजीने 'भूले बिसरे चित्र' की जैदेई तथा 'सामर्थ्य और सीमा की रानी मानकुमारी आदि विधवाओं की समस्या प्रस्तुत की है । ये दोनों भी विधवा उच्च कूल की हैं तथा उनके पास बहुत धन भी हैं । मगर इन दोंनो में परस्पर विरोधी तत्व दिखाई देते है । जैदई अपने पति के मृत्यु के उपरांत जायदाद संभाल कर अपने पति के प्रति श्रध्दा के भाव रखकर उसकी अभिलाषा की पूर्ति करने में कामयाब होती है । अपने पति के हत्यारा, बारजोरसिंह से बदला लेने के हेतु तथा काम वासना की पूर्ति करने के हेतु वह ज्वालाप्रसाद का सहारा लेती है । स्पष्ट है कि असहाय नारी को सहारे की जरूरत होती है, और वह तब तक चूप नहीं बैठती है, जबतक उसे सहारा नहीं मिलता हैं । इसलिए यमुनाने कहा भी हैं ''औरत सहारा ढूँढ़ती है, लंबरदार चले जाने के बाद लंबरदारिन ने तुम्हारा सहारा चाहा ।.... लेकिन तुम कही भाग न खड़े हो, उसे सहारा देना बंद कर न दो इसीलिए लंबदारिन ने तुम्हारे सहारे का मोल चुकाया है, धन से मन से और तन से ।" [18] यहाँ यमुना का चरित्र उपन्यासकार ने बहुतही ऊँचा उठाया हैं, यमुना ज्वालाप्रसाद की पत्नी होते हुए भी विधवा स्त्री को सहारा देने को कहा/ना इस बात से यमुना के मन

की उदारता मुखरित हो उठी है । साथ ही साथ आधुनिक नारियों को एक दूसरे के प्रति उदारता का प्रकट करने का संदेश भगवती बाबू ने भूले बिसरे चित्र की यमुना के माध्यम से दिया है ।

'सामर्थ्य और सीमा' की रानी मानकुमारी सौंदर्य से लथपथ एवं ऐश्वर्य संपन्न विधवा नारी है । जब उसका ऐश्वर्य छीन लिया जाता है, तब उसके मन में समाज की कुत्सित भावना जागृत हो उठती है । उसे अपना जीना असहय होता है वह नाहरसिंह से कह देती है कि "मैं सच कहती हूँ, कक्काजी मेरे लिए सुंदरता वरदान न होकर अभिशाप बन गई है ।"[19] इससे ये स्पष्ट होता है कि विधवा नारी को विशेष कर जोयुवा अवस्था में विधवा होती है, उनको समाज में बहुत हो कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, जिससे उनका जीना हराम हो जाता है । इस प्रकार भगवती बाबूनें विधवा समस्या को चित्रित करके विधवाओं का समाधान हो जाए इस दृष्टीसे भी प्रयास किया है ।

वेश्या समस्या

इस समस्या को भगवती बाबू की यथार्थन्वेषी दृष्टि ने बड़ी सहानुभूति के साथ मौलिक ढंग से प्रस्तुत किया है । भगवती बाबू ने चित्रलेखा की नायिका चित्रलेखा के बारे में कहा है कि चित्रलेखा वेश्या न थी, वह केवल नर्तकी थी । स्पष्ट है कि भगवती बाबू परित्यक्ता नारी के प्रति सहानुभूति से काम चलाते थे, और उनका उध्दार करने का प्रयास उन्होंने अपने उपन्यासों को माध्यम से किया है ।

'तीन वर्ष में प्रभा तथा सरोज नामक, वेश्या के तुलनात्मक चरित्र को अंकित करके मानवतावादी दृष्टि का परिचय ही दिया है । वेश्याओं को केवल धन प्राप्ति के कारण ही मजबूरन होकर इस व्यवसाय को स्वीकरना पड़ता है, किंतु समाज की दृष्टि उनकी मजबूरी को देख नहीं सकती है । मात्र अपनी वासना की पूर्ति करने के हेतु वे समय की क्षणभंगुरता का सहारा लेकर अपना काम बनाते है फिर उनकी तरफ वे मुडकर देखते तक नहीं है । इस प्रकार भगवतीचरण वर्माजीने समाज की विकृत दृष्टि का चित्रण किया है ।

अवैध प्रेम की समस्या

भगवती चरण वर्मा जी ने इस समास्या को अपने सभी उपन्यासों में चित्रित किया है । 'चित्रलेखा' की चित्र-लेखा इस समस्या की शिकार बनी है । चित्रलेखा कृष्णादित्य से प्रेम करती है, और उसे उससे गर्भधारणा होती है । समाज के लांछन बरदाश्त न करने के कारण कृष्णादित्य आत्महत्या कर बैठता है । कृष्णादित्य का आत्महत्या कर बैठना यह अवैध प्रेम की समस्या का चरमबिंदु है ऐसा कहा जाए तो कोई आपत्ति न होगी । दूसरी ओर पेट में पाप बढ़ता है यह जानकर कभी चित्रलेखा बीजगुप्त से अपने अवैध प्रेम के संबन्ध रखती है । 'रेखा' इस मनोवैज्ञानिक उपन्यास की नायिका रेखा यौन भावना से - कुंठित होकर यौन तृप्ति की तीव्र लालसा को मिटाने के लिए अनेकों के साथ संबध रखती है । वस्तुतः अवैध प्रेम की समस्या से समाज तथा दोनों को भी क्षति पहुँचती है, फिर भी भगवती बाबूने अवैध प्रेम को मात्र शारीरिक तृप्ति का माध्यम बनाकर उसे पारिवारिक मान्यता प्रदान करने का प्रयास किया है, जो कि हमें वह गलत लगता है ।

अनमेल विवाह की समस्या

भारतीय समजा व्यवस्था में अनमेल विवाह प्रथा का प्रचलन बहुत पहले सेही चलता आ रहा है । जिसमें किशोरवस्था की लकड़ियों का विवाह वृदध के साथ किया जाता है । इसके मूल में दहेज प्रथा का योगदान रहा है । बाल-विवाह चाहे किसी भी ढंग से संपन्न किया गया हो, किंतु उसकी परिनति का अंत दुःखद ही होता है । इसप्रकार से किए गए विवाह की नारी को अपनी आंतरिक भावनाओं को दबाना पड़ता है, जिससे उसका मानसिक संतुलन बिगड जाता है । भगवतीचरण वर्माजी ने अपने उपन्यासों में अनमेल विवाह से उत्पन्न नारी के मन की विडंबना का विशद चित्रण खुलकर किया है । इसके उदा. ' पतन ' ' टेढ़े मेढ़े रास्ते ' 'रेखा ' तथा ' भूले बिसरे चित्र ' आदि उपन्यासों में मिलते हैं । 'टेढ़े मेढ़े रास्ते' उपन्यास में अनमेल विवाह से दुखी दांपत्य जीवन की शोककथा चित्रित की है । इसकी बली बनी है महालक्ष्मी, जो उच्चकुलवंश की

वधू है । किंतु पाश्चात संस्कृति से-प्रभावित उमानाथ में भारतीय संस्कृति के प्रति चीढ़ उत्पन्नं होने से वह लक्ष्मी की ओर अधिक ध्यान नहीं देता है, जिसकी परिणति पूरा वैवाहिक जीवन शोकमय बन जाता है ।

'रेखा' उपन्यास में अनमेल विवाह से टुटती हुई कौटुंबिक विश्रृंखलता को उपस्थित किया है । इस उपन्यास की नायिका 'रेखा' अपने माता पिता के विरोध को ठुकराकर स्वेच्छा से 52 वर्ष के प्रौढ़ प्रोफेसर प्रभाशंकर के साथ विवाह करती है, जबकि उसकी उम्र 21 वर्ष की है । प्रेम तथा भावना से अंधी हुई रेखा के यह निर्णय बहुत महँगा पड़ता है । उसकी काम वासना की पूर्ति जब सफल नहीं होती है तब उसका आंतरिक मन कुंठित हो जाता है । प्रभाशंकर एक बार स्पष्ट कहता है कि "अपने शरीर की भूख तो मैं जानता था, लेकिन तुम्हारे शरीर की भी कोई भूख हो सकती है, यह मैं भूल गया था । "[20] प्रभाशंकर के इस वक्तव्य से रेखा और टूट जाती है फल स्वरूप वह अनेकों के साथ संबन्ध रखती है ।

इस प्रकार भगवती बाबू ने अनमेल विवाह का चित्रण करके समाज को एक नई दृष्टी प्रदान की है ।

पाप पुण्य की समस्या

भगवती बाबू ने 'चित्रलेखा' के अलावा 'पतन' तथा 'तीन वर्ष' उपन्यासों में इस समस्या को प्रस्तुत किया है । चित्रलेखा में इसकी स्पष्टता अधिक गहरी है, क्योंकि उसकी कथा का थीम ही पाप-पुण्य पर आधारित है । इस समस्या का निराकरण करते हुए भगवतीचरण वर्माजी ने अपने 'चित्रलेखा' उपन्यास के 29 वे संस्करण की भूमिका में कहा है कि "चित्रलखा" में एक समस्या है और मानव जीवन को तथा उसकी अच्छाइयों और बुराइयों को देखने - परखने का अपना निजी दृष्टिकोण उनके अनुसार यह समस्या मानव जीवन की शास्वंत समस्या है । पाप क्या है ? जैसे आदि प्रश्न पात्रों के माध्यम से उठकर उनका निवारण भी किया है और अंत में कहा है कि "संसार में पाप कुछ भी नहीं है । ----- जो कुछ मनुष्य करता है, वह उसके स्वभाव के अनुकूल होता है और स्वभाव प्राकृतेक है । मनुष्य अपना स्वामी नहीं है । वह परिस्थिति का दास है, विवश

है । ---- वह कर्ता नहीं, केवल साधन है । फिर पाप और पुण्य कैसा ? ----- हम न पाप करते है और न पुण्य करते है, हम केवल वही करते है, जो हमें करना पड़ता है ।" 2।

वस्तुतः पाप-पुण्य की समस्या सामाजिक समस्या है । ऐसा होते हुए भी भगवतीचरण वर्मा ने उसे कुछ भी नहीं है ऐसा कहा है । इससे हमें ऐसा लगता है कि समाज भी इसी तरह का अनुकरण करेगा जिससे समाज को क्षति पहुँचेगी यह जानकर भगवती बाबू ने पाप-पुण्य को कुछ भी नहीं है ऐसा कहकर पलायनवादी दृष्टि अपनाई है, किंतु आलोचकों ने उसे सामाजिक समस्या की मान्यता दी है । जिसे भगवती बाबूने तार्किक रूप में नैतिक मनोबल का सहारा लेकर सुंदर ढ़ंगसे पेश किया है ।

उपर्युक्त समस्याओं के अलावा भगवतीचरण वर्माजी ने आर्थिक समस्या पूँजीवादी व्यवस्था, शोषित समस्या, बेकारी, की समस्या आदि समस्या को भी अपने उपन्यासों में उठाया है । वस्तुतः भगवती बाबू व्यक्तिवादी दिखाई देते थे, किंतु उन्होंने कतिपय समस्याओं को सामाजिक पृष्ठभूमि पर उतारकर उन्हें चित्रित किया है । उनमें समाज के प्रत्येक अंग का चित्रण हुआ है । अतः अंत में हम इतना ही कह सकते है कि भगवती बाबू ने समाज की विविध समस्याओं का यथार्थपरक दृष्टि से चित्रण किया है । स्वाधिनता प्राप्ति के बाद सामाजिक क्षेत्र में तेजी से परिवर्तन हुआ/शिक्षा के प्रसार तथा नारी चेतना की जागृती के परिणाम से नई समसयाएँ निर्माण होने लगी थी । उनके उपन्यासों में स्वतंत्रता पूर्व तथा स्वतंत्रता के बाद के समाज का जीवन चित्रित हुआ है । सन 1943 ई.के पूर्व की सामाजिक जीवन संबन्धी समस्याओं का चित्रण उनके 'तीन वर्ष', 'भूले बिसरे चित्र', 'आखिरी दाँव' आदि में मिलता है, तो स्वतंत्रता के बाद की सामाजिक समस्याओं का चित्रण उनके 'प्रशन और मरीचिका', सबहि नचावत राम गोसाई' तथा सामर्थ्य और सीमा आदि उपन्यासों में मिलता है। स्पष्ट है कि सामाजिक यथार्थ का चित्रण करने वाले उपन्यासकरों ने देश में उत्पन्न सामाजिक समस्याओं को ही अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है । उनमें भगवती बाबू का विशेष स्थान है और वह भी एक सफल सामाजिकउपन्यासकार के रूप में । उनके द्वारा रचित सामाजिक उपन्यासों का संक्षेप में परिचय आगे दिया गया है ।

तीन वर्ष (1946)

सन 1946 ई.में प्रकाशित 'तीन वर्ष' उपन्यास में भगवती बाबू ने आधुनिक समाज का चित्रण किया है । इस उपन्यास की कथा सामाजिक धरातल पर ही आधारित है । आधुनिक व्यस्थाने मनुष्य के अंदर जो धन की लिप्सा भर दी है, जिससे मनुष्य किस ढ़ंग से खोखला बनता जा रहा है इसका यथार्थ चित्रण इसमें मिलता है । वस्तुतः आज हम देखते हैं कि स्त्री और पुरूष के संबन्ध भावनाओं पर आधारित न होकर आर्थिक सुविधाओं पर ही आधारित हैं । इस उपन्यास में भगवती बाबू ने स्त्री और पुरूष के बींच आर्थिक संबन्धों के साथ ही साथ अच्छी और बुरी मान्यताओं को अस्वीकृत कर दिया है और अंत में समाज में प्रतिष्ठित नारियों की तुलना वेश्याओं के साथ करके वेश्याओं को श्रेष्ठ घोषित करने का प्रयास किया है । अतः यह भगतवीचरण वर्माजि का क्रांतिकारी कदम ही है, जो उन्होंने ढाढस के साथ रखा है । इस उपन्यास के प्रमुख पात्र हैं - अजित, रमेश, प्रभा और सरोज । इनमें से प्रभा प्रतिष्ठित वकील कृष्णशंकर की लड़की है और अजित समृद्ध परिवार का पात्र है, तो रमेश निम्नमध्यवर्गीय परिवार का पात्र है । लेखक ने सरोज इस स्त्री पात्र को वेश्या के रूप में चित्रित करके यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि रमेश और प्रभा आर्थिक विष्मता के कारण निकट नहीं आ पाते । सुशिक्षित प्रभा संपत्ति के मोह से छुटकारा नहीं पाती है, तो इसके विपरित सरोज समाज से तिरस्कृत होते हुए भी जीवन के उच्च मुलयों के प्राति आस्था रखती है, जिससे सरोज का चारित्र बहुत ही ऊँचा उठा है ।

'तीन वर्ष' की कथावस्तु का प्रारंभ इलाहांबाद विश्वविद्यालय के वातावरण में रमेश और प्रभा नामक दो पात्रों के पारस्पारिक प्रेम के वार्तालाप से होता है । रमेश झाँसी से केवल विद्याअध्ययन करने के हेतु इलाहाबाद में आता है, वह शहरी वातावरण से अबोध है और न ही उस के मन में संसार की मनोरंजनात्मक क्रिडाओं के प्रति दिलचस्पी है । ऐसे ही एक दिन रमेश का परिचय कुँवर अजित के साथ होता है । अजित अपने जीवन के प्रति केवल निजी दृष्टिकोण से देखता है । इसप्रकार दो विभिन्न परिस्थिति के बीच में लडखडाते हुए रमेश को विश्वविद्यालयीन वातावरण मे

जीवन के प्रति एक नयी दृष्टि का पता चलता है । रमेश इस वातावरण में इतना घूलमिल जाता है कि वह अपनी दरिद्रता को भूल कर सर कृष्णशंकर की लड़की प्रभा, जो उसकी सहपाठी है, उसे पाने के लिए सपने संजोएँ लगता है । प्रभा को पाने के लिए वह इतना भावुक हो उठता है कि प्रभा के अलावा उसे कुछ सूझता तक नहीं । रमेश के अनुसार "प्रेम ईश्वरीय है, दो आत्माओं का बंधन है, प्रेम अनादी है, प्रेम अनंत है । प्रेम ही मनुष्य का प्राण है ।"[22] स्पष्ट है कि रमेश का प्रेम के प्रति आदर्शवादी दृष्टिकोण रहा है । इस प्रकार रमेश प्रभा के कारण प्रेम में अंधा हो जाता है । प्रेमअंधे रमेश को सही राह में लाने के लिए अजित उसे बार-बार समझाता है कि तुम प्रभा से प्रेम करने में गलती कर रहे हो, किंतु रमेश को अजित की बात पर विश्वास ही नहीं होता है । वह प्रभा में इतना डूब जाता है कि बी.ए. का परीक्षा में वह सेंकड़ डिवीजन में उत्तीर्ण होता है । की

अजित एक उच्चवर्गीय परिवार का लड़का है । अतः उसे सुख-सुविधाओं की कोई कमी नहीं है । वह रमेश को भी अपना मित्र बनाकर उसको भी सुख-सुविधाएँ प्रदान करता रहता है । यह अजित की उदारता तथा हृदय की विशालता ही है । अजित को समाज का अच्छा ज्ञान है, वह अच्छी तरह से जानता है कि प्रभा की जिंदगी विपरित प्रकृति की है । वह अपने वर्ग की जीती जागती केवल तस्वीर मात्र है, उसके लिए प्रेम मात्र एक खिलौना है, मौज की वस्तु है । रमेश इसी बात से अज्ञात है अतः अजित अपने अबोध मित्र का प्रभा से छुटकारा पाने के लिए प्रयास करता है, किंतु वह उसमें असफल होता है । रमेश तथा प्रभा इन दोनों के संबन्ध का कही पर तो अंत होना चाहिए यह जानकर अजित एक दिन रमेश को प्रभा के सामने विवाह का प्रस्ताव रखने की सलाह देता है और वह खुद भी उसकी मदद करती है ।

रमेश जब विवाह का प्रस्ताव प्रभा के सामने रखता है, तब उसे बहुत ही अपमानित होना पड़ता है, क्योंकि विवाह को केवल एक मात्र आर्थिक समझौता समझनेवाली प्रभा उसे स्पष्ट शब्दों में कह देती है कि "मैं तो विवाह को संस्था मानती हूँ जिसके द्वारा पुरूष स्त्री के भरण पोषक तथा

तथा उसकी रक्षा का अपने उपर भार लेता है ।[23] केवल स्वच्छंदता वृत्ति से जीवन की मौज लूटनेवाली प्रभा द्वारा विवाह का प्रस्ताव ठुकरा दे जाने से प्रेम का भावुक रमेश अपना मानसिक संतुलन खो बैठता है । उसका मानसिक संतुलन इतना बिगड जाता है कि वह वेश्यागामी बनता है, बेतहाशा शराब पीने लगता है । अजित जब उसकी असफलता को देखकर उस पर व्यंग्य करता है, तो रमेश अजित को पिस्तौल छिनकर गुस्से में अजित को गोली मारता है, किंतु सौभाग्यवश (से) उसे छोटी सी चोट आती है । इस घटनासे तथा पूर्व की घटनाओं से रमेश शर्मिंदा होकर इलाहाबाद छोड़ देता है और अनिश्चित की यात्रा पर चला जाता है । यही पर उपन्यास का प्रथम खंड समाप्त होता है ।

उपन्यास के द्वितीय खंड में प्रेम से हारा हुआ रमेश आहत होकर इधर - उधर घूमता हुआ दिखाई देता है । वह अपने आपको इतना खो बैठता है कि अजित के साथ की गई पूर्व घटना को जानते हुए भी वह शर्मिंदा होकर उसके पास जाता है और उससे दो हजार रूपये लेकर भटकने के लिए बाहर जाता है । रमेश की दृष्टि में प्रेम अब केवल धोका ही है ऐसी धारणा हो जाती है । अतः वह प्रेम से नफरत करने लगता है । प्रेम को धोखा माननेवाले रमेश का एक दिन ट्रेन में विनोद नामक व्यक्ति से परिचय हो जाता है । विनोद उसे कानपुर में अपने घर में आने का निमंत्रण देता है । सामाजिक परिवेश से अनजाना रमेश विनोद के साथ भी दोस्ती का नाता निभाने लगता है और अपने गम को भूलने का प्रयास करता है । वह विनोद के साथ वेश्याओं के कोठों के दरवाजे भी खटखटाने लगता है । ऐसे ही एक दिन उसका परिचय सरोज नामक एक वेश्या से हो जाता है । सरोज मजबूरन वेश्या बनी थी क्योंकि उसकी माता का व्यवसाय ही वेश्या का था । प्रेम को धोका समझनेवाला रमेश फिर एक बार अपने प्रेम से ही सरोज को अपनी ओर आकृष्ट करता है । रमेश के प्रभावशाली व्यक्तित्व से तथा व्यवहार से सरोज भी उससे बेहद प्यार करने लगती है । सरोज की यह हालत देखकर रमेश सोचने लगता है कि वह मेरे साथ अपनी कोमल भरी प्यार की भावनाएँ मुझे इसलिए अर्पित कर रही है कि शायद उसने मुझे धनवान ही समझ लिया है । रमेश की यह धारणा मात्र गलत ही थी, क्योंकि सरोज उसके साथ तन से नहीं मन हो प्यार करती थी ।

सरोज अपने इस प्यार को अंत तक निभाना चाहती थी किंतु गलत धारना से ग्रस्त रमेश एक दिन सरोज को एक चिठ्ठी छोडकर छोडकर भाग जाता है ।

अपना सबकुछ अर्पित करनेवाली सरोज के दिल पर रमेश के अचानक चले जाने से बहुत बुरा असर पड़ जाता है । वह उसके वियोग के कारण तपेदिक बीमारी से जूझने लगती है । तपेदिक बीमारी से ग्रस्त मृत्यु-शय्या पर पड़ी सरोज हरदम रमेश की याद करती है । सरोज रमेश के प्रेम में इतनी दिवानी हो गई भी कि मृत्यु-शय्या पर पड़ी हुई आवस्था में वह रमेश को अंतिम बार मिलने के हेतु अखबार में विज्ञापन दे देती है । विज्ञापन पढ़ते ही रमेश तुंरत उसे मिलने के लिए आता है, तब उसे सरोज के प्रेम की सच्चाई का पता लगता है, किंतु सरोज तब-तक भयानक बीमारी से ग्रस्त हो गई थी, जिससे उसे छुटकारा पाने की संभवना न थी । अतः इस भयानक परिस्थिति से परिचित सरोज अपने प्रेम के खातिर अपनी सारी धन - दौलत रमेश को अर्पित कर देती है और उसके ही चरणों पर अंतिम दम तोड देती है । इस प्रकार सरोज एक वेश्या होते हुए भी, प्रेम, आदर्श तथा महान त्याग की भावना के कारण 'तीन वर्ष' उपन्यास की अमर पात्र बनकर अपनी अमिटसी छाप छोड़कर जाती है ।

सरोज की मृत्यु के उपरांत रमेश धनवान तो बनता ही है साथ ही साथ उसके अंदर मानवीय प्रेम भावना पुनःश्य एक बार साकार हो उठती है । वह फिर इलाहाबाद जाता है । वहाँ उसे धनवान पाते ही प्रभा मिलने लगती है । एक दिन प्रभा रमेश के पास चार लाख रूपये का बैंक ड्राफ्ट देख लेती है । अतः वह अपना जाल रमेश पर फैलाने का प्रयत्न करती है । वस्तुतः प्रभा एक भद्र समाज की नारी है । वह धन-दौलत से सुसंपन्न होने कारण विलासमयी जीवन बीताना ही अपना सबकुछ समझती है । रमेश की आर्थिक स्थिति को देखकर वह तुरंत ही उसके साथ समझौता करने का प्रयत्न करते हुए एक दिन उसे स्पष्ट कहती है कि "अब तो विवाह करने कोई बाधा नहीं ।" [24] किंतु प्रभा के साथ घटी हुई पूर्व घटना से तथा परिस्थिति की भयानक ठोंकरे खाया हुआ रमेश बहुत ही सचेत हो जाता है, वह प्रेम को अच्छी तरह से पहचानने लगता है । उसके

अनुसार अब धन केवल भोग-विलास और फैशन की पूर्ति करने का साधन है । अतः उपन्यास के अंत में वह प्रभा की खिल्ली उडाते हुए कहता है "तुम पुरूष का धन लेती हो पुरूष को अपना शरीर देने के बदले में - है न ऐसी बात और यह वेश्यावृत्ती है - प्रभाजी नमस्कार ।" [25] इस प्रकार रमेश प्रभा के विवाह का प्रस्ताव ठुकरा देता है और यही पर उपन्यास समाप्त हो जाता है ।

इस प्रकार भगवतीचरण वर्मा ने समाज के अंतर्गत बढ़ती हुई अनीति का रमेश - प्रभा, सरोज तथा अजित इन पात्रों के माध्यम से पर्दाफाश किया है और एक नये तथ्य पर प्रकाश डाला है ।

आखिरी दाँव (1959)

सन 1950 ई. में प्रकाशित भगवतीचरण वर्माजी का यह चरित्रप्रधान सामाजिक उपन्यास है । इसमें एक ओर नियतीवाद की अस्थिरता को चित्रित किया है, तो दूसरी ओर पूँजीवादी सभ्यता के कारण बिगडी हुई आर्थिक विषमता तथा आर्थिक लिप्सा का चित्रण यथार्थ ढंग से किया है । इस उपन्यास का प्रत्येक पात्र अपने जीवन की विषमता का कटु सत्य महसूस करता हुआ पाया जाता है । अतः यह चित्रण करते समय लेखक ने फिल्म क्षेत्र को चुना है और इसके अंतर्गत धन के कारण एक व्यक्ति के साथ किस ढंग से असामाजिकता का व्यवहार करता है इसका अंकन किया है ।

उपन्यास की कथावस्तु का प्रारंभ होता है उत्तरप्रदेश के बिशनपुर गाँव से । कथा का प्रारंभ बहुत ही अच्छे ढंग से किया है "रामेश्वर अपने खेत से लौट रहा था । अनाज कट चुका था, और उसी दिन संयोग से शहर के व्यापारी ने आकर उसके खेत में ही उसका अनाज खरीद लिया था । रामेश्वर प्रसन्न था, उसकी टेंट में पाँच सौ रूपये थे । " [26] रामेश्वर कुलीन ठाकुर वंश में जन्मा हुआ एक किसान था । वही रामेश्वर आज पैसे मिलने के कारण प्रसन्न था । मिले हुए पैसे वह अपनी संदुक में रखना चाहता तो था किंतु परिस्थिति की विवशता के आधीन रामेश्वर मथुरा नामक एक जुआरी के उकसाए जाने पर पैसे संदुक में रखने के बजाए जुऐ के अड्डे में जाकर वहीं पर दाँव में हार जाता है । स्वभाव का अधिन रामेश्वर उस दिन केवल पाँच सौ रूपये ही नहीं बल्कि अपना सर्वस्व खो बैठता है । इस प्रकार रामेश्वर निर्धन बनकर अपने विशनपुर गाँव को

छोड़कर बंबई चला जाता है । इसके बाद तुरंत ही दूसरे परिच्छेद में एक और दूसरा स्त्री पात्र चमेली को भी इसी ढंग से बंबई को भगाया है । घर के कष्टप्रद जीवन से ऊबकर चमेली अपने पडोसी रतनू सुनार के साथ बंबई को भाग जाती है, जाते समय वह अपने पति दमडीलाल की जरा भी सोचती नहीं है । इस प्रकार उपन्यासकारने पहले दो परिच्छद में दो पात्रों रामेश्वर तथा चमेली को भगाकर उपन्यास की कथावस्तु का ढाँचा खडा करके कौतुहल जगाया है ।

अपने चंगुल में फँसी हुई चमेली को रतनू बंबई में धोका देकर उसे ठगाने का प्रयत्न करता है, किंतु रामेश्वर चमेली को बचाता है और उसे अपने घर ले आता है । इसप्रकार लेखक ने दो बिघडे हुए देहाती पात्रों को एक दूसरे को मिलाया है । जिससे कथावस्तु में विकास होता गया है ।

बंबई में रामेश्वर तगादगीर की नौकरी करके चमेली के साथ उदरनिर्वाह करने लगता है । रामेश्वर के स्नेह के कारण चमेली उसके साथ रहने लगती है और अपने मन से वह उसे चाहने भी लगती है । इसप्रकार वे दोनों एक दूसरे के साथ बहुत निकट आते है । रामेश्वर की पूर्व जिंदगीने उसे संसार से विरक्त तो किया था किंतु बंबई में चमेली के कारण उसमें फिर एक बार परिवर्तन हो जाता है जिसकी "उसने यह कल्पना भी न की थी कि इस उम्र में और प्रदेश में जाकर उसे गृहस्थी जमानी पड़ेगी ।" [27] इसप्रकार तेईस वर्ष की चमेली के साथ पैंतालिस वर्ष का रामेश्वर अपनी जिंदगी की शुरूवात फिर एक बार करता है । कुछ दिनों के पश्चात देहाती वातावरण में पली हुई चमेली बंबई महानगर के वातावरण से परिचित हो जाती है । जिससे उसके मन में भी इस तरह के वातावरण में जिने की तमन्ना जागृत हो उठती है ।

रामेश्वर गिरगांव के जिस इलाखे में रहता था उस इलाखे में जगमोहन की सत्ताईस वर्ष उम्र की पत्नी राधा के साथ चमेली का परिचय होता है । जगमोहन फिल्म कंपनी में नौकरी करता है, तो उसकी पत्नी राधा फिल्म के लिए एकस्ट्रा हिरोईन सप्लाई करने का काम करती है । वस्तुतः

राधा उस इलाखे में एक बदचलन औरत के रूप में प्रसिद्ध थी । राधा चमेली को भी अपने जाल में फँसाने का प्रयत्न करती है । महीना तीस रूपये की कमाई करनेवाले रामेश्वर के साथ रहकर बंबई के शान ओर शौकत वातारवरण में रहने की संभवना नहीं यह बात चमेली जान लेती है । अतः वह राधा की बातों से कुछ मात्रा में विचलित होती तो है, किंतु राधा की वास्तविक जिंदगी का पता चलाने के बाद वह अपने को सँभाल भी पाती है । बंबई में पैसा ही सर्वशक्तिमान है यह बात जब चमेली को महसूस होने लगती है, तब वह भी कुछ कमाना चाहती है और वह रामेश्वर को वह नौकरी करने के संबन्ध में पूछती भी है । रामेश्वर उसको मना करता है किंतु चमेली जिद पकड़कर कहती है "अच्छा नौकरी नहीं करूँगी । बीना नौकरी का ही कोई काम करवा दो ।"[28] चमेली के जिद के कारण रामेश्वर उसे भुलेश्वर इलाके में एक पान की दूकान खुलवा देता है ।

पान की दूकान चलानेवाली चमेली कुछ दिनों तक संतुष्ट तो हो जाती है, किंतु राधा की शान और शौकत को देखकर वह फिर एक बार अपने अंदर घुटन महसूस करने लगती है । एक दिन रामेश्वर भी मारवाडी के चार हजार रूपये सट्टे के खेल में हार जाता है । उन पैसो का भुगतान करना रामेश्वर के लिए कठिनसा कार्य हो जाता है अतः विवश हो जाता है । उसकी विवशता पता जब चमेली को लग जाता है, तब चमेली राधा की सहायता से शिवकुमार के फिल्म कंपनी में प्रवेश करती है । इसप्रकार चमेली रामेश्वर की कठिनाई को हल करने के लिए मजबूर होकर फिल्म क्षेत्र में प्रवेश करती है । इसप्रकार उपन्यासकारने चमेली को फिल्म क्षेत्र में लाकर उस क्षेत्र के घुटनभरे वातावरण की झलकियाँ प्रस्तुत की है, जिसके अंतर्गत फिल्म क्षेत्र में धन लिप्सा के कारण किस प्रकार उथल-पुथल होती है इसका भी मार्मिक चित्रण किया है ।

देहाती रामेश्वर भी चमेली का फिल्म क्षेत्र में जाने के बाद यह महसूस करने लगता है कि पैसा ही सबसे बड़ी शक्ति है और उसे किसी भी तरह से प्राप्त करना चाहिए, चाहे शरीर और आत्मा भी क्यों न बेचनी पड़े । अतः रामेश्वर रघुनाथ का गाय-भैसो का तबेला खरीदकर उसमें अवैध धंदे (शराब बेचना तथा जुआ खेलना) करने लगता है । रामेश्वर के अवैध धंदे का पता जब चमेली को

124:51
A

लग जाता है, तब वह उसे समझाने का प्रयत्न करती है किंतु रामेश्वर उसकी बात मानता नहीं है । वह उसे प्रत्युत्तर देता है "रामेश्वर मर्द है, वह काम कर सकता है, वह काम करेगा । पान की दुकान, भैंस का तबेला - इसमें रामेश्वर को शर्म क्यों हो ?" [29] रामेश्वर की इस बात से चमेली चूप रह जाती है । स्पष्ट है कि चमेली रामेश्वर को बहुत चाहती है और वह उसे आराम से बैठने को कहती भी किंतु रामेश्वर को स्त्री की कमाई पर आराम से बैठकर मौज-मजा करना अच्छा नहीं लगता है । इसलिए वह कमाना चाहता है ।

धीरे-धीरे रामेश्वर अवैध धंधों के कारण पूरा टूटता जाता है । तो चमेली भी अपनी तथा रामेश्वर की विवशता के कारण फिल्म क्षेत्र के कतिपय पात्रों के चंगुल में फँसती जाती है, उससे उसे आसानी से छुटकारा पाने की संभवना नहीं है । वह उस क्षेत्र की सफल नायिका और मैनेजिंग डायरेक्टर भी बन जाती है किंतु उसका आंतरिक मन उबने लगता है । एक ओर चमेली इस क्षेत्र से परेशान होती है, तो दूसरी ओर रामेश्वर के अवैध धंदो से । रामेश्वर अब जुऐं में बुरी तरह से हार भी खाने लगता है जिससे वह और अधिक टूट जाता है । चमेली को रामेश्वर का टूटना सहा नहीं जाता है । अतः वह रामेश्वर को समझाकर बंबई छोड देने का निर्णय लेती है और बची हुई जिंदगी शांति से बीताना चाहती है । रामेश्वर भी चमेली की बात मान लेता है ।

रामेश्वर और चमेली बंबई छोड रहे हैं यह बात जब सेठ शीतल-प्रसाद को मालूम होती तो वह एक बहुत खतरनाक चाल रामेश्वर तथा चमेली के साथ खेलता है । शीतल-प्रसाद चमेली को पाने के हेतु रामेश्वर को जुए के दाँव में अपने लोगों के द्वारा चंगुल में फसाने का आयोजन करता है । दूसरी ओर वह चमेली को अपने यहाँ बुलाकर अपना उद्देश्य सफल करने का आयोजन करता है । चमेली शीतल-प्रसाद के दाँव पेच अच्छी तरह से जानती थी अतः वह उसके हर तरह के प्रलोभनों को ठुकरा देती है और समय आने पर वह शीतल-प्रसाद की गोली मारकर हत्या भी कर देती है और फिर वह रामेश्वर को बचाने का प्रयत्न करती है ।

रामेश्वर गोरेगांव में जुए के अड्डे पर अपनी जिंदगी का आखिरी दॉव खेल रहा था और इधर पुलिस चमेली का पीछा कर रही थी । चमेली रामेश्वर को दाँव पर से हटाने का प्रयोजन कर रही थी किंतु विडंबना की बवंडर में घूमता हुआ रामेश्वर और एक दॉव ----- और एक दॉव कहके चमेली की बात की ओर ध्यान नहीं देता है । रामेश्वर अपना अंतिम आखिरी दॉव जुए में लगाता है । उसके पास का सब कुछ धन समाप्त हो गया था और उसी वक्त पुलिस वहाँ पहुचती है । चमेली डर के मारे दूसरे कमरे में जाकर अपने आपको पुलिस से बचने के लिए गोली मारकर आत्महत्या कर लेती है । पुलिस की हलचल का पता जब रामेश्वर को लग जाता है, तब वह अपना आखिरी दॉव भी हार चुका था । वह दॉव पर से भागने का प्रयास करता है , किंतु पुलिस उसे घेर लेती है । पुलिस को चमेली भी खून से लथपथ अवस्था में पाई जाती है । उसकी साँस केवल रामेश्वर के लिए बची थी वह रामेश्वर को देखकर कहती है "नहीं बचा सकी, न तुम्हें और न अपने को ।" [30] और चमेली दम छोड देती है । रामेश्वर को विवश होकर पुलिस सार्जेंट को कहना पड़ता है कि "ले चलिए सार्जेंट साहब-आज मैं जिंदगी का आखिरी दाँव हार चुका हूँ, ले चलिए ।" [31] यही पर उपन्यास समाप्त होता है ।

अपने खिलौने (1957)

सन 1957 ई. में प्रकाशित 'अपने खिलौने' यह भगवतीचरण वर्मा जी हास्य व्यंग्यात्मक एवं मनोरंजनात्मक सामाजिक उपन्यास है । इसमें उपन्यासकारने आधुनिक जीवन में विडंबनात्मक स्थितियों का जो निर्माण हो रहा है उसका मार्मिक चित्रण किया है । आज सामाजिक जीवन में सामाजिक संरचना अपने मूल रूप से अलग होती हुई दिखाई देती है । उसमें कई विकृतियाँ समाविष्ट हो रही है । आज का समाज कतिपय कुंठाओं तथा मिथ्याचरण से ग्रस्त हो गया है । सामाजिक संस्था तथा सरकारी संस्था अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए ऐसा व्यवहार करके आगे बढ़ रही है उनको समाज के पतन से कोई लेन देन नहीं है । केवल अपने को ही कला एवं संस्कृति के ठेकेदार समझनेवाले वर्ग के खोखलेपन का वर्णन भगवती बाबू ने बड़े मनोरंजनात्मक ढंग से चित्रित किया है ।

उपन्यास की कथा का प्रारंभ होता है भारती सरकार के सेक्रेटरी श्री जयदेव भारती की अनिंद्य सुंदरी, सत्रह साल की लडकी मीना से । लेखक ने मीना के रूप रंग रहन सहन आदि का वर्णन करते समय हास्य व्यंग्य का सहारा लिया है । वर्णन बहुत ही मार्मिक एवं मजेदार बन गया है, जिससे आज की आधुनिक युवती का यथार्थ चित्रण हो गया है । लेखक ने मीना का वर्णन करते हुए यह पुष्टी जोड दी है "इतना करने के बाद, मीना के रूप की बात और रह जाती है । वैसे मैं न जाने कितनी लडकियों को निष्कलंक रूपवती कहकर उन्हें प्रसन्न कर चुका हूँ, इसलिए मीना अद्वितीय रूपवती कहकर मैं उन लडकियों को नाराज करने का दु:साहस तो न करूँगा ।" 32 यही मीना भारतीय उच्च समाज की पार्टियों की रौनक है । मीना का विवाह एक मिल ओनर अशोक गुप्ता के साथ करीब करीब तक हुआ है । अशोक की बुआ अन्नपूर्णा विधवा है, किंतु अपने रूप के कारण सभ्य समाज में वह हमेशा पापुलर बनकर रहने का प्रयत्न करती है । ढलती हुई उम्र में भी वह मीना के ममेरा भाई रामप्रकाश को अपने आकर्षण व्यक्तित्व से बाँध देती है । ये सब व्यक्ति मिलकर अपने स्वार्थ की भावना छिपाकर कला भारती संस्था खोलने का आयोजन करते हैं । इस प्रकार लेखक ने प्रत्येक पात्र के अपने निजि व्यक्तित्व को उभारने का प्रयत्न किया है ।

यश नगर के युवराज वीरेश्वर प्रताप जो फ्रांस में भारत सरकार के राजदूत के सचिव है । उनकें इन व्यक्तियों बीच प्रवेश करने से उपन्यास की कथावस्तु नया मोड लेती है । वीरेश्वर प्रताप खुद एक अच्छा चित्रकार है, उसके मिलने से अन्नपूर्णा और मीना उसके प्रेम को पाने के लिए उतावली हो उठती है । इस स्थिति से रामप्रकाश एवं अशोक ग्रस्त हो जाते हैं और वे दोनों भी अपनी प्रेमिकाओं को पाने के लिए प्रयत्नशील रहते है । एक ओर वीरेश्वर को पाने के लिए अन्नपूर्णा उसके चित्र के प्रदर्शनी का आयोजन खुद करने का प्रयोजन करती है तो दूसरी ओर समाज में अपना मान बनाए रखने के लिए जयदेव भारती भी वह खर्च उठाने के लिए तैयार होते है । इन दोनों की होड में वीरेश्वर प्रताप खुद अपने पैसों से चित्र-प्रदर्शनी का आयोजन करता है । चित्र-प्रदर्शन का उद्घाटन करने के लिए गृहमंत्री के लंबे भाषण के द्वारा कला का हास्यं एवं व्यंग्यपूर्ण शौली से मूल्यांकन किया है ।

चित्र प्रदर्शनी में वीरेश्वर प्रताप का कैरा कोमल नामक 'कोमल-कला-कुंज' संस्था की प्रधानाध्यापिका से होता है । कैरा कोमल वीरेश्वर के चित्र देखकर मुग्ध हो जाती है और उसके चित्रों का वह उचित शब्दों में सन्मान भी करती है - "चित्रकला को आपने एक नवीन दिशा प्रदान की । वर्तमान युग की भावना के आप प्रतीक हैं । यामिनी राय तथा अन्य आधुनिक कलाकार आपके सामने बिल्कुल तुच्छ हैं ।" [33] कैरा कोमल के इस कथन से वीरेश्वर प्रताप को विचित्र अनुभव होता है ।

वस्तुतः कैरा कोमल प्रसिद्ध वायलिन वादक पीतम कोमल की पत्नी है । फिर भी वीरेश्वर प्रताप की ओर आकर्षित हो जाती है । वीरेश्वर जब उसकी संस्था में जाता है, तब वह उसे कहती है - "युवराज ! तुम बहुत विलम्ब करके आए । मेरे शरीर पर किसी दूसरे का अधिकार हो चुका है । केवल मेरे प्राण तुम्हारे है ।" [34] स्पष्ट है कैरा कोमल वीरेश्वर को बहुत चाहने लगती है । वह उसका परिचय अपने पति से गुरूवर्य के रूप में करा देती है ।

युवराज वीरेश्वर प्रताप एक पार्टी में मुख्य अतिथि का निमंत्रण मीना को भेज देता है । उसी प्रकार वह सामन्यरूप से अन्नपूर्णा को भी निमंत्रण दे देता है । इससे अन्नपूर्णा नाराज हो जाती है, किंतु अपने उद्देश्य को सफल करने के लिए वह उसे प्रकट नहीं कर पाती है । मीना पार्टी की मुख्य अतिथि होने के कारण अशोक के दिल में उथल पुथल होने लगती है । अतः वह मीना काही पार्टी में सर्वस्व न बनाए रखने के लिए वें मीना के सें में 'कॉड लिवर आयल' मिला देता है, जिससे पार्टी में मीना रंग बेरंग हो जाता है । इसी बीच जूते के सबन्ध में कथासूत्र का ताना बूनकर लेखक ने हँसी मजाक निर्माण करके विभिन्न समाज और संस्कृति में जूते के विभिन्न स्थान की ओर संकेत किया है कि "हरेक समाज में जूते ने अपना एक निजी स्थान बना लिया है ।"[35] अशोक ने मीना के लिए बनावाकर लाना । कृष्णन जैसे ब्राहनणत्व के पूरे संस्कार पाये हुए व्यक्ति से जूते की अवहेलना करना और अंत में कृष्णन के घर में ही एक जूता रखना और मीना की धाँधल मचना यह प्रसंग बहुत ही हास्यवर्धक बन गया है ।

कॉड लिवर आयल के कारण पार्टी में मीना का बेरंग हो जाता है, जिसका सद्मा वह सह नहीं पाती है । वह अचानक बीमार पड जाती है । वीरेश्वर प्रताप भी मीना, अन्नपूर्णा तथा

कैरा कोमल से उब जाता है । कैरा कोमल तो वीरेश्वर प्रताप को एक दिन बहुत ही परेशान करती है जिससे तंग होकर वीरेश्वर प्रताप खुद को बचाने के लिए दिल्ली से बंबई चला जाता है । मीना भी अशोक तथा वीरेश्वर के प्रति नफरत करने लगती है । उसकी बीमारी भी ठीक न होने के कारण डॉ. उसका दिल बहलाने के लिए अन्य जगह पर स्थलांतर करने की सलाह देते हैं । अतः अन्नपूर्णा तथा दिलवरकिशन जख्मी को मीना के साथ लखनऊ भेज दिया जाता है ।

दिलवर किशन जख्मी लखनऊ के प्रसिद्ध शायर है किंतु वह फिल्म उद्योग में काम करने की इच्छा से बंबई आता है, वहाँ उसका काम नहीं बन पाता है । अतः वह दिल्ली में ही इन लोगों के साथ रहता था ।

लखनऊ में कला-भारती शाखा की स्थापना की जानेके बाद और वहाँ के प्रसन्नपूर्ण वातावरण से मीना का दिल बहलाने लगता है । एक दिन घूमते समय दिलवर किशन जख्मी का फिल्म डायरेक्अर शैद के साथ परिचय होता है । शैदी जख्मी की शायरी पर मुग्ध होकर वह उसको तथा मीना को फिल्म में काम देने का आश्वासन दे देता है । मीना भी तुरंत तैयार हो जाती है । शैद जख्मी को तथा मीना को बंबंई में फिल्म शुटिंग करने के लिए ले चलता है । मीना और जख्मी के साथ अन्नपूर्णा भी बंबई चलने के लिए तैयार होती है । यही पर कथावस्तु पुनःश्च एक बार नया मोड लेती है । शैद इन लोगों जब बंबई ले जा रहा था तब झाँसी में फिल्म कंपनी के मालिक रामास्वी चेटिटयार उन्हे कलकत्ता चलने को कहता है । वस्तुतः यह चेटिटयार तथा शैद की चाल थी, जिसे जख्मी, मीना और अन्नपूर्णा भी समझ नहीं पाती है । लेखक ने यहाँ फिल्म क्षेत्र में नए कलाकार के साथ विशेष कर तरूणियों के साथ किस ढ़ंब से भद्दा व्यवहार किया जाता है इसकी ओर संकेत किया है । लेखक खुद इस क्षेत्र में काम कर चुके थे अतः उन्होंने उसकी प्रत्येक बारिकी का मार्मिक ढंग से चित्रण किया है । झाँसी से कलकत्ता लौटते समय वर्धा स्टेशन पर चेटिटयार जख्मी को धक्के मारकर रेल से उतार देता है और वे दोनों मीना से हिरोइन बनाने की पूरी किमत वसूल करने का प्रयत्न रेल में ही करने लगते है । इस व्यवहार को अन्नपूर्णा तुरंत ताड लेती है और अपने पिस्तौल से गोली झाड देती है जिससे शैद तथा चेटिटयाद को रेल से भाग जाना पडता है ।

अशोक दिल्ली से लखनऊ में अपनी संस्था के कामकाज के लिए रामप्रकाश के साथ आ रहा था तभी रास्तें में उन्हे इस घटना का समाचार मिलता है । वे दोनो भी संकट में फँसे हुए अपने आदमियों को बचाने का प्रयत्न करते है किंतु उन दोनो बहुत पी लेने के कारण झगडा होता है । अतः उन दोनों को हवालात में डाल दिया जाता है । इस प्रकार संकट में पडे हुए सभी पात्रों का समाचार पाते ही वीरेश्वर प्रताप उन्है छुडवाकर बंबई को बुलाता है । वहाँ फिर एक बार मीना और अन्नपूर्णा वीरेश्वर के प्रेम को पाने का प्रयत्न करने लगती है, किंतु अंत में वीरेश्वर प्रताप की फान्स की प्रेमिका लिली वीरेश्वर को ढूँढ़ते हुए बंबई आती और वीरेश्वर का भांडा फोड देती है । उपन्यांस के अंत में इन दोनों असफल नारियों में से मीना अशोक का हाथ पकडकर तथा अन्नपूर्णा रामप्रकाश का हाथ पकडकर दिल्ली लौटने के लिए चल निकलती है । बेचारे दिलवर किशन जख्मी को फिर एक बार मजबूर होकर शायरी करनी पड़ती है -

"किस-किस पै हँसे जख्मी - किस-किस पै यहाँ रोवे,
सब अपने खिलाडी हैं - सब अपने खिलौने हैं ।" [36]

इस प्रकार उपन्यासकारने 'अपने खिलौने' के द्वारा फिल्म क्षेत्र की उथल-पुथल, पुलिस कर्मचारियों का अमानवीय व्यवहार, कलाकार की होने वाली उपेक्षा तथा उच्चमध्यमवर्गीय समाज की प्रदर्शन प्रवृत्ति आदि को चित्रित करके गिरते हुए समाज का यथार्थ चित्रण किया है । इस सबन्धी डॉ. प्रतापनारायण टंडन ने ठीक ही कहा है "व्यंग्यात्मक दृष्टिकोन से लेखक ने इससे यह सिद्ध किया है कि सामाजिक पत नोन्मुखता नैतिक मूल संक्रमण का मूल कारण है ।" [37]

अतं में हम कह सकते है कि 'अपने खिलौने' यह भगवतीचरण वर्माजी की हिन्दी साहित्य की सर्वश्रेष्ठ मौलिक हास्य-व्यंग्य कृति है, जिसमें समाज के प्रत्येक पहलू का अंकन हुआ है ।

भूले बसरे चित्र (1959)

भगवतीचरण वर्माजी का प्रसिद्ध विषालकाय उपन्यास 'भूले बिसरे चित्र सन 1959 में प्रकाशित हुआ । इस उपन्यास का आधारफलक बडा विस्तृत है, जिस पर उपन्यासकारने एक कायस्य परिवार की चार पीढ़ियों की कथा को अंकित किया है, जो अपने समसामायिक संघर्षो में उठती है और गिरती है । इस उपन्यास के माध्यम से लेखक ने हमारे देश के सामाजिक, राजनितिक और

सांस्कृतिक जीवन के कालखंड की झलकियाँ प्रस्तुत की है । 'भूले बिसरे चित्र' उपन्यास के भगवती बाबू के साहित्य यात्रा का मील रूप पत्थर भी कहा जाता है, जिसमें सन 1880 से 1930 ई. तक के 50 वर्षो के भारतीय समाज का चित्र राजनीतिक तथा सामाज्कि परिदृश्य में देने का प्रयत्न किया है । वस्तुतः यह उपन्यास विस्तृत पृष्ठभूमि पर अंकित एक रंगित चित्रफित की तरह सा बन गया है । डॉ. शांतिस्वरूप गुप्त ने ठीक ही कहा है "इसके विशाल चित्रफलक को देख सहसा फ्रेंच उपन्यासकार प्राउस्त के उपन्यास 'Rememberance of things past' की याद आती है । परंतु जहाँ प्राउस्त का दृश्यांकन स्मृति के त्रिपार्श्व फलक से छनकर भाता है, वहाँ इस उपन्यास में इतिहास की वस्तुपरक दृष्टिमात्र है ।"[38]

कथावस्तु की सुविधा के लिए लेखक ने इस उपन्यास को पाँच खंडो में विभाजित किया है । खंड परिवर्तन करते समय कथावस्तु में एकसूत्रता एनाए रखने की ओर बारीकी से ध्यान दे दिया है । साथ ही साथ उपन्यास के तत्वों की ओर भी लेखक ने बारीकी से ध्यान दे दिया है, जिससे यह उपन्यास स्वातंत्रोत्तर हिन्दी साहित्य की सफल एवं महत्वपूर्ण निधी है ।

उपन्यास का प्रारंभ होता है मुन्शी शिवलाल द्वारा बनाए गए इस्तगासा से । भूपसिंह इसके बदले में शिवलाल को अठन्नी देते हैं । इसी इस्तगासे प्रसन्न होकर कलक्टर साहब मुन्शी शिवलाल का लडका ज्वालाप्रसाद को नायब तहसिलदार बना देते हैं । इस शुभवार्ता से शिवलाल के परिवार में प्रसन्नता की लहर फैलती है । तहसीलदार बनने के बाद ज्वालाप्रसाद घाटमपुर जाता है । बाद में उसकी पत्नी यमुना भी चली जाती है । यही पर संयुक्त परिवार को पहली चोट लग जाती हैं ।

ज्वालाप्रसाद तथा यमुना के अनुपस्थिति में शिवपुर के लाला प्रभुदयाल घसीटे के पास ज्वालाप्रसाद के लिए उपहार देते है । ज्वालाप्रसाद का मन उपहार के कारण भविष्य की अशंका से विचलित हो जाता है । घाटमपुर में आने के बाद ज्वालाप्रसाद ने प्रभुदयाल के बारें में बहुत कुछ सुना था । किंतु प्रभुदयाल की पत्नी जैदेई ने भी घाटमपुर से यमुना को शिवपुरा में ले गई थी, जिससे इन दो परिवार का पारस्पारिक सबन्ध अधिक गहरा होता अता है ।

घाटमपुर के जमींदार ठाकुर गजराजसिंह की लडकी के विवाह से कथावस्तु में नया मोड उत्पन्न होता है । इस विवाह में यमुना, ज्वालाप्रसाद, लाला प्रभुदयाल और ठाकुर गजराज सिंह के साले बरजोर सिंह आदि सम्मिलित हो गए थे । गजराज सिंह को पत्नी देवकुँवर ने स्वागत की जिम्मेदारी यमुना पर सोपी थी । इस स्थिति को ज्वालाप्रसाद उस समय ठीक समझ नहीं पाता है किंतु तीन महीने बाद उसका वास्तविक पता उन्हें लग जाता है । मझपुर के तालुकेदार चंद्रभूषण सिंह के बडे लडके लाल इंद्रभूषण सिंह के साथ लडकी का विवाह गजराज सिंह को बहुत कहँगा पड़ता है । विवाह के लिए उसे प्रभुदयाल के पास अपने पॉच गाँव रेहन करने पडते है, जिससे शादी के समय गजराज के साले बरजोर सिंह तथा प्रभुदयाल में कुछ अनप-शनप सी बातें होती है । बरजोर सिंह ने भी प्रभुदयाल के पास अपनी बची हुई सौ बीघे जमीन रेहन रखकर कर्ज लिया था, जिससे दोने में संघर्ष उत्पन्न होता है । परिणाम स्वरूप प्रभुदयाल बरजोर सिंह पर मुकदमा चलाते है । कुकादमें से बचने के लिए गजराज सिंह ज्वालाप्रसाद के पास आते है, और उन्हें कहते है "बरजोर सिंह पर भूत सँवार हो गया हे, इस नालिश का सम्मान पाकर । खेत की जुताई-बुवाई छोडकर कचहरी-अदालत दौड़ना किसी को अच्छा तो नहीं लगता । आज सुबह-ही-वह लाला प्रभुदयाल के यहाँ गया है । ----- कुल तीन कोस की दूरी पर ही तो परभूदयाल का मकान है, समझ में नहीं आता ।" [39] इस स्थिति से होनेवाली विडंबना के बारें में दोनों को भी समझाने का प्रयास करता है किंतु धन की लालसा से अंधा प्रभुदयाल समझ नहीं लेता है ।

मुकादमा प्रभुदयाल जीत लेता है । सौ बीघे जमीन के नीलाम के दिन उसके अलावा कोई नहीं जाता है, सारी जमीन वह खुद ही खरीदता है । इस अव्यवहार के कारण बरजोर सिंह उसे यह धमकी देता है कि "हमारी जमीन पर कब्जा करने की बेवकूफी न कर बैठना ।" [40] इस धमकी से प्रभुदयाल बहुत घबराता है । अतः वह सहायता के लिए ज्वालाप्रसाद के पास जाता है, किंतु ज्वालाप्रसाद उसकी सहायता करने के लिए अस्वीकार कर देते है । लगातार परिश्रम के कारण थके हुए ज्वालाप्रसाद आराम से लेटे थे तभी घबराये हुए स्वर में लक्ष्मीराम मुनीम उन्हें जगाता है "लंबरदारिन ने सरकार को इसी तरह बुलाया है । लंबरदार साहेब नहीं रहे, कुछ देर पहले किसी ने उन्हें मार डाला ।" [41]

प्रभुदयाल के मृत्यु के बाद उसका पुत्र लक्ष्मीचंद अपने मामा के यहाँ कानपुर चला जाता है, तो जैदेई ज्वालाप्रसाद का सहारा पाकर शिवपुरा में अपनी जमीन-जायदार सम्हालने लगती है । इसी बीच ज्वालाप्रसाद को एक दिन बहुत भयानक सदमा पहुचता है । उनके बयान के कारण बरजोर सिंह पर गिरफ्तारी का वारंट निकलता है, जिससे छुटकारा पाने के हेतु बरजोर सिंह आत्महत्या कर लेता है ।

यमुना अपने बच्चे को जन्म देने के लिए अपने पिता रामसहाय के यहाँ जाती है । यह बात ज्वालाप्रसाद के चाचा राधेलाल को खटकती है । इसी बीच छिनकी की पत्नी घसीटे के मृत्यु होती है । छिनकी और शिवलाल ज्वालाप्रसाद के यहाँ जाते है, जिसमें राधेलाल के पूरे परिवार पर बहुत बुरा असर पडता है । राधेलाल को अपने चार पुत्रों के परिवार को छोडकर शिवलाल का जाना अच्छा नहीं लगता है । अतः वह विवश होकर शिवलाल को कहता भी है "दादा घर की हालत तो आप देख ही रहे हैं । आपके जाने के बाद ज्वाला जो बीस रूपया महीना भेजता था, उसका भेजना बंद तो न कर देगा ।" 42 इस प्रकार संयुक्त परिवार को दूसरा भयानक धक्का लगता है । ज्वालाप्रसाद के यहाँ शिवलाल बडे सन्मान के साथ रहने लगते है । उनकी ही सलाह तथा सहायता से गजराज बरजोर के खेत की फसल जैदेई के कब्जे से बचाता है । ज्वालाप्रसाद भी जैदेई को बरजोर सिंह के नाम जमीन कर देने में मनाते है, जिसके कारण बहुत ही बोलबाला होता है । अतः मीर साहब ज्वालाप्रसाद के हित के लिए उनका तबादला करके इलाहाबाद के सोराँव तहसील में तहसीलदार के पद पर करते है । एक दिन राधेलाल अपनी पत्नी के साथ ज्वालाप्रसाद के यहाँ अचानक आ टपकते है और धीरे-धीरे राधेलाल का पूरा परिवार भी जाता है । राधेलाल की पत्नी घर पर अपना अधिकार जमाती है । इससे घर में खींचा-तानी होने लगती है । छिनकी को यह बात बहुत खटकती है । यमुना भी अपने अंदर यह घुटन (बरदाहत) करती है । छिनकी हमेशा इस सबन्धी छेडखानी करती है, किंतु शिवलाल के कारण उसे चुप रहना पड़ता है । शिवलाल भी अच्छी तरह से जानते है, किंतु वे मर्यादा का उल्लंघन नही होने देते । वे यह अनुभव करने लगते हैं कि वे खुद पाण्डु है, "मृत्यु जिनको खाने के लिए हर समय मँडराया करती है और राधेलाल धृतराष्ट्र है, घर की सत्ता जिनके हाथ मरने के बाद आ जाएगी । पूरा महाभारत का रूपक है । छिनकी गलत नहीं कहती ।" 43 अतः इस झंझट से छुटकारा पाने के हेतु शिवलाल अपने भतीजे किशनलाल को जैदेई के यहाँ कारिंदा बना देने की योजना बनाते है ।

घुटन भरे वातावरण से ज्वालाप्रसाद का मन ऊब जाता है । ज्वालाप्रसाद का चचेरा भाई बिसनलाल को मैकू के साथ कुश्ती जीतने कारण वीरभानु सिंह हनुमान मंदिर के पास की जमीन उसके नाम पटट्य कर देते है इस बात से सोराँव में हलचल पैदा हो जाती है । इसी बीच गिरजीलाल छुटटी में सोराँव आते है, उनके अदालत में शामू और सलीमा का मुकादमा चल रहा हे, उसे वे राधेलाल और शिवलाल ज्वालाप्रसाद के द्वारा मध्यस्थी करके हल करना चाहते है, किंतु बार-बार झूठ को सहरा देना ज्वालाप्रसाद को अच्छा लगता है । अतः वे इस बात को बनाने के लिए तैयार नहीं होते । यह बात शिवलाल सहन नहीं करते है, इससे परेशान होकर वे अपने सिर पर सुरही पटक-कर अपनी जीवन यात्रा खत्म कर देते हैं । इस प्रकार यहाँ एक पीढी का अंत हो जाता है ।

शिवलाल की बरसी के दिन राधेलाल का पूरा परिवार सोराँव में इकटठा हो जाता है । किसनलाल मार-पीट कराने से घायल होकर सोराँव आता है, और बताता है, कि लक्ष्मीचंद ने उसे नाहक ही पिटवाया है । इस बात पर ज्वालाप्रसाद भरोसा नहीं करते ।

बेचू मिसिर ज्वालाप्रसाद यह खबर देता है कि शामलालने अमराई से 5 गाडी आम तोडकर बेचने के लिए इलाहाबाद भेज दिए है । ज्वालाप्रसाद उनके चचेरे भाई द्वारा किए गए अपराधों की वास्तविकता को जानकर ठप्प रह जाते है । इस प्रकार राधेलाल के लडके हमेशा शरारत करते रहते है, जिससे ज्वालाप्रसाद बहुत तंग आते है ।

एक दिन छिनकी यमुना को यह खबर देती है कि शामलाल की बहू ने सेर की हँसली और सवासेर के पैरों के कडे बनवाए है । ज्वालाप्रसाद को भी यह समाचार धक्का दे देता है, क्योंकि उनके अपने घर में यह क्या हो रहा है इसका उन्हें पता भी नहीं है । एक दिन शामलाल की पत्नी को राधेलाल का पूरा परिवार मारपिट कर रहा था । अतः ज्वालाप्रसाद घर के वातावरण से उबकर इलाहाबाद जाते है, किंतु घर के महाभारत में कोई परिवर्तन नहीं होता है ।

देविदयाल गहनों का हिसाब देकर जाता हे, तब घर में बहुत ही कोलाहल मच जाता है । अपने मन में हमेशा घुटन को दबाने वाला ज्वालाप्रसाद एक दिन राधेलाल को स्पष्ट शब्दों में कह देता है कि तुम इस घर को छोडकर फतहपुर चले जाओ । इससे राधेलाल बहुत क्रोधित हो उठता

है और ज्वालाप्रसाद को गालियाँ देकर अपना परिवार लेकर फतहपुर जाता है । इसके बाद ज्वालाप्रसाद का मन हलका तो हो जाता है, किंतु उनके अंदर एक और नई घुटन बढ़ जाती है ।

ज्वालाप्रसाद रिटायर होने के बाद इलाहाबाद में जार्ज टाऊन में मकान बनवाकर रहने लगते हैं । साथ में गंगाप्रसाद की पत्नी रुक्मिनी तथा पुत्र नवल भी है । गंगाप्रसाद जौपुर में डिप्टी कलक्टर के पद पर नियुक्त है । एक दिन विलायत से बैरिस्टरी पास करके ज्वालाप्रसाद के मामा का लडका ज्ञानप्रकाश आता है । गंगाप्रसाद और ज्ञानप्रकाश स्कूल के सहपाठी थे । दोनों की बातचीत के सिलसिले में ज्ञानप्रकाश गंगाप्रसाद को अमृतसर काँग्रेज में शामिल होने को तैयार कर लेता है ।

छिनकी की मृत्यु के बाद भीखू ज्वालाप्रसाद को यह सलाह देता है कि वे दोनों सपत्नीक जौनपुर आकर रहे, क्योंकि गंगाप्रसाद बिगड रहा है - उसने रखेल रखी है, वह शराब भी बहुत पी रहा है । आदि - आदि । अतः ज्वालाप्रसाद इस बात को मानकर जौनपुर जाते हैं । उससे गंगाप्रसाद के जीवन में कुछ मात्रा में परिवर्तन होता है किंतु उसका मानसिक तनाव बढने लगता है । अतः वह अपना मन बहलाने के हेतु अपनी रखेल वेश्या मलका को बनारस भेज देता है और वहाँ वह आने-जाने लगता है । कलकत्ता से काँग्रेस बैठक समाप्त करके ज्ञानप्रकाश जौनपुर आता है, इसी दिन रुक्मिनी को लडका होता है । रात में जब गंगाप्रसाद बनारस से आता है, तब ज्ञानप्रकाश उसे मलका सबन्धी छेडखानी करता है । इस प्रकार गंगाप्रसाद को काबू में रखने का प्रयास किया जाता है ।

एक दिन अटाला मसजिद के सामने जौनपुर के वकील फरहतुल्ला की अध्यक्षता में काँग्रेस द्वारा असहयोग आंदोलन छेडा जाता है और तनाव उत्पन्न हो जाता है । उसे दबाने का ज्वालाप्रसाद प्रयत्न करता है । किंतु आंदोलन बढ़ता ही जाता है गंगाप्रसाद का भी ज्वाईंट मॅजिस्ट्रेट के पद पर कानपुर में तबादला होता है ।

दिसंबर के तीसरे सप्ताह में बंगाल में तथा उत्तर भारत में क्रिमिनल ला एमेंडमेंट एक्ट लागू हो गया जिसके कारण प्रमुख काँग्रेस नेता गिरफ्तार कर लिए गए ।

अहमदाबाद कॉंग्रेस से लौटकर ज्ञानप्रकाश कानपुर आता है । उस दिन 1922 के पले महीने के पहली तारीख थी गंगाप्रसाद को बधाई देने के लिए बड़े वर्ग के लोगों की भीड लगी थी । ज्ञानप्रकाश को इस घटना से एक नए तथ्य का पता चलता है कि इस आंदोलन की राढ है पूँजीपति वर्ग के बड़े बड़े लोग और उनका उद्‌देश्य है कि उनको बड़ा मुनाफा मिले और अपना काम बनवाने के लिए उनको मिले हुए मुनाफे में से गंगाप्रसाद को भी देते है, क्योंकि वे सरकारी अफसरों की आँखे बंद कर सकेंगे । इस कटुसत्य को जानकर गंगाप्रसाद भी सचेत हो जाता है ।

कानपुर हडताल की घटना तथा कॉंग्रेस कार्यकर्ता की जेल में हुई मृत्यु को जनता ने सरकार को ही दोषी ठहराया उससे बहुत ही बड़ा जुलूस निकला अतः उसे रोकने के लिए गंगाप्रसाद मौजूद थे, किंतु बीच में दंगा हो जाता है । उसे निपटाने के लिए लाठीचार्ज करना पडता है । शाम के समय चौरीचौरा पुलिस चौकी में इक्कीस पुलिस तथा थाने को जला दिया है यह बात चपरासी द्वारा गंगाप्रसाद को समझती है । दूसरे ही दिन पूरे देश में वातावरण बड़ा उग्र रूप धारण करता है जिसका कारण था मिस्टर हैरिसन के यहाँ डिनर के समय हैरिसन महात्मा गांधी सबन्धी अपमानजनक अनुदगार । जिससे ज्वालाप्रसाद भी बहुत तिलमिला हो उठते है और हैरिसन को कडे शब्द में प्रतित्युर देते हैं "मिस्टर हैरिसन, यह तुम्हारा कमीना और लुच्चापन है, जो तुम उस महापुरूष को गालियाँ दे रहे हो हम लोग उसकी राजनीति से भले ही सहमत न हों, लेकिन उसकी महत्ता, ईमानदारी और शराफत से कोई इनकार नहीं कर सकता ।" [44]

गांधी द्वारा असहयोग आंदोलन पीछे लेने की बात से ज्वालाप्रसाद के आंतरिक मन में अशांति पैदा होती है । इसी समय ज्वालाप्रसाद को एटा में डिप्टी कलक्टर के पद पर जाने का आदेश मिलता है । किंतु ज्वालाप्रसाद यह बात अनुभव कर रहे थे कि सत्य, न्याय, मानवता, गुलाम के इसका कोई महत्त्व नहीं है । अतः इससे विवश होकर वह ज्ञानप्रकाश से इस्तीफा देने की बात कह देता है । ज्ञानप्रकाश उन्हें उनकी आर्थिक स्थिति के बारें में समझाता तो है, किंतु गंगाप्रसाद अपने निर्णय पर अटल रहता है और इस्तीफे पर हस्ताक्षर भी कर देता है । इसी समय फरहतुल्ला मुलतान में हिन्दू-मुस्लिम दंगे की सूचना दे देता है, जिसे सुनकर गंगाप्रसाद की चेतना जागृत हो उठती है । वह फरहतुल्ला से कहता है - "फरहतुल्ला साहेब, हमें इस गुलामी से अभी निजात

मिलती नहीं दिखलाई देती । मुझे ऐसा लगता है कि ये दंगे अभी बढेंगे, बेतहाश बढेंगे । ----- इस बुनयादी भेद-भाव को मिटाने में सैकडो साल लग जायेंगे । इन सैकडो सालों का इंतजार कौन कर सकता है । ----- जब गुलामी ही भोगनी है तो आराम के साथ हँस खेलकर क्यों न भोगी जाए ।" [45] यह कहकर गंगाप्रसाद इस्तीफा के टुकडे कर देता है ।

गंगाप्रसाद के मित्र रायबहादुर कामताप्रसाद की लडकी उषा के साथ नवल की शादी सबन्धी बातें होती है, किंतु नवल की पढाई की जिद तथा गंगाप्रसाद की बीमारी के कारण बात वही पर अटकती है । नवल गंगाप्रसाद के साथ उपचार करने के लिए मिर्जापुर जाता है किंतु गंगाप्रसाद की बीमारी में कोई परिवर्तन नहीं होता है । विद्या और नवल उनकी अथक परिश्रम से सेवाश्रुषा करते है किंतु एक दिन खून की कै के दौरे से उनकी मृत्यु हो जाती है । मृत्यु के पूर्व गंगाप्रसाद ने मिर्जापुर के बिंदेश्वरी प्रसाद के पुत्र सिद्धेश्वरी प्रसाद के साथ विद्या के विवाह की बात तय की थी । ज्वालाप्रसाद विवाह को एक वर्ष तक टालना चाहते थे किंतु बिंदेश्वरी प्रसाद के हट के कारण शादी करनी पडती है । शादी में बहुत खर्च होने के कारण परिवार को आर्थिक संघर्ष का सामना करना पड़ता है ।

साईमन कमिशन का कॉंग्रेस ने तीव्र विरोध किया था । नवल भी उसमें जुट जाता है । इसी बीच विद्या नवल को अपने ससुराल की शरारते पत्रद्वारा बतलाती है जिससे नवल उदास हो जाता है ।

कुछ दिनों के पश्चात विद्या के ससुराल से तार आने कारण ज्ञानप्रकाश और नवल विद्या को उन्नाव से अपने घर ले आते है । विद्या भी उस समय ससुरालवालों से सबन्ध विच्छेदन करती है और कॉंग्रेस में सम्मिलित होती है । जिससे उसका मन प्रसन्न रहने लगता है । इसी बीच यमुना बीमार पड़ती है । यमुना बिंदेश्वरी का यह सदमा सह नहीं सकती है कि वह सिदधेश्वरी की शादी दूसरी लडकी के साथ कर रहा है । विद्या इस वार्ता से प्रसन्न होती है किंतु यमुना को इस भयानक धक्के से मृत्यु को स्वीकारना पडता है ।

यमुना के मृत्यु के बाद नवल का रिश्ता ही बदलता है । वह नौकरी न करके राजनीति में भाग लेता है । ज्वालाप्रसाद भी इसका विरोध नही करते वे केवल अनुभव ही करते है कि यह नया जमाना है, औरउसकी तहजीब भी नई है । उन्हें इस बात में खुशी है कि नवल नेक लडका है, वह चरित्रवान है । अतः वे भी उसके कार्य के प्रति संतोष व्यक्त करते है । किंतु यमुना की असमय मृत्यु उनके अंदर एक अजिबसी घुटन पैदा कर देती है, जिससे वे टुटते जा रहे थे ।

2 मार्च 1930 में महात्मा गांधी जी के लार्ड अर्विन के नाम पत्र प्रकाशित होने से देश में बहुत उथल-पुथल मच जाती है । नवल इस क्षेत्र में बडी लगन से काम कर रहा है तो विद्या अध्यापिका का काम कर रही है । इससे नवल को धक्का लगता है किंतु राष्ट्रप्रेम के कारण वह उस ओर ध्यान नहीं देता है । अतः वह गांधी द्वारा नमक कानून तोडने के आंदोलन में उतरता है । 5 अप्रैल 1930 में गांधी नमक कानून तोड रहे थे उसी दिन नवल के बंगले पर 20 हजार आदमियों का जुलूस पहूँचा । उस समय विद्या नवल की आरती उतारती है और माला पहनाती है । भीड में नवल जिंदाबाद ----- के नारे लगाए जाते है । पुत्र की जयजयकार सुनकर रुक्मिनी अपार समुदाय में अपनी पुत्र को विदा होते हुए सुखद अनुभव करती है । नवल ज्वालाप्रसाद के चरणस्पर्श करके आशिर्वाद लेता है और भीखू को राम राम करके जुलुस का नेतृत्व करने को निकलता है । भीखू और ज्वालाप्रसाद उस दृष्य को सजल नेत्रों से देख रहे थे । अनायास ही ज्वालाप्रसाद कहते है कि "हाँ भीखू समझ में नहीं आ रहा । आज पचास साल में क्या से क्या हो गया । सब कुछ बदल गया, एकदम बदल गया, तुम बदल गए -----, मैं बदल गया । न जाने कितने नये लोग आ गए, न जाने कितने पुराने लोग चले गए ।"[46] इस पर भीखू ज्वालाप्रसाद का हाथ पकड कर कहता है "चलो भइया आराम करो चलके । ई सब भगवान की लीला आय । ई पर हमार बस नहीं, मुला समझ में नही आवत है ।"[47] फिर भी अनुभवी ज्वालाप्रसाद को यह बातें समझ में नही आती है कि वह पुनःश्च एक बार भीखू को कहता है, "भीखू यह सब क्या हो रहा है और क्यों हो रहा है ? यह तरह-तरह के चित्र आप-ही-आप ही बनते और मिट जाते है, यह क्यों ?[48]

दो बूढे, जिन्होंने युग देखा था, जिंदगी के अनेक उतार चढाव देखे थे जिन्होंने, जिनके पास अनुभवों का भंडार था, विवश थे, निरूत्तर थे । और दूर हजारो, लाखों, करोडे आदमी जीवन और गति से प्रेरित नवीन उमंग और उल्लास लिए हुए एक नवीन दुनिया की रचना करने के लिए जा रहे थे । इस टिप्पणी के साथ उपन्यास यहीं पर समाप्त हो जाता है ।

सामर्थ्य और सीमा (1962)

सन 1962 ई. प्रकाशित 'सामर्थ्य और सीमा' यह भगवतीचरण वर्मा जी द्वारा सांस्कृतिक धरातलपर लिखा हुआ सामाजिक उपन्यांस है । स्वातंत्र्य भारत की पृष्ठभूमि पर लिखे गए इस उपन्यास में लेखकने कतिपय शाश्वत समस्याओं को चित्रित किया है । इस उपन्यास की समस्या है - मनुष्य के सामर्थ्य और उसकी सीमा की । प्रत्येक युग का मनुष्य अपने आपको बड़ा समझता है । अतः अपनी इस अहं की भावना से ग्रस्त मनुष्य दूसरों की, प्रकृति की तथा नि यति की उपेक्षा करता है, किंतु हर बात की एक निश्चित सीमा होती है, जहाँ पर उसका सर्वनाश होता है । इस सबन्धी डॉ. प्रतापनारायण टंडन ने उचित ही लिखा है " यह उपन्यास वर्णनात्मक शैली में लिखा गया है और इसकी कथा प्रतीकात्मक रूप में अदृष्ट की महान शक्ति और उसके समक्ष मनुष्य की सामर्थ्य की तुच्छता का द्योतन करती है । मनुष्य बड़े-बडे कार्य करना चाहता है, और उनके करते हुए वह अपने आपको सर्व शक्तिमान समझता है । परंतु प्रकृति की विशाल शक्तियों के सामने वह सदैव हीन है और दुर्बल है ।"[49] वर्माजी ने मनुष्य की इसी प्रवृत्ति का चित्रण मार्मिक ढंग से किया है ।

इसकी कथावस्तु संक्षेप में इस प्रकार है - कथावस्तु का प्रारंभ होता है प्रकृति की गोद में बले हुए सुमनपुर स्टेशन पर पाँच व्यक्तियों के आगमन से । ये पाँचों व्यक्ति है हिन्दूस्थान के बडे उद्योगपति रतनचंद मकोला, विश्वविख्यात इंजिनियर, चिंतामणि देवलंकर, रिब्लिक दैनिक पत्र के प्रधान संपादक ज्ञानेश्वर राव, साहित्यकार एवं संस सदस्य पंडित शिवानंद शर्मा और प्रसिद्ध कलाकार एवं अर्कीटेक्ट अल्बर्ट किशन मंसूर । ये पाँचों व्यक्ति समर्थ्य होने के कारण उन्हें उत्तरे प्रदेश के मंत्री जोखनलाल ने सुमनपुर के विकास करने के हेतु निमंत्रित किया है । इन सब व्यक्तियों में प्रकृति पर विजय पाने का गर्व एवं अहंम की भावना प्रचुर मात्रा में है और साथ ही साथ नारी के प्रति प्रबल आकर्षण भी ।

सुमनपुर स्टेशन पर इन पाँचों व्यक्ति की भेट यशनगर की अनिय सुंदरी एक युवा विधवा रानी मानकुमारी से होती है । यही से कथावस्तु हरदम एक नया मोड लेते हुए आगे बढती है । अपने आपको समर्थ्य एवं सक्षम समझनेवाले व्यक्ति सुमनपुर विकास की योजना बनाने का आरंभ करते है । उनके साथ रानी मानकुमारी का वास्तव्य हमेशा रहता है । अत: वे पाँचों भी रानी मानकुमारी के रूप पर आसक्त होते है । युवावस्था में वैधव्य प्राप्त रानी मानकुमारी में इन व्यक्तियों के संपर्क में आने से फिर से जीने की प्रबल इच्छा जागृत हो उठती है । पाँचों व्यक्तियों में अपना अपना विशेष व्यक्तित्व होने से रानी मानकुमारी बहुत ही प्रभावित होती है । रानी मानकुमारी की स्थिति को सुधारने के लिए ये पाँचो व्यक्ति उसकी सहायता करते है और साथ ही साथ उसका प्रेम पाने का प्रयत्न भी करते है और देवलंकर तो उसके सामने विवाह करने का प्रस्ताव रखता है । रतनचंद मकोला उसे कंपनी का मैनेजिंग डायरेक्टर तक तैयार है, पंडित शिवानंद शर्मा उसे साहित्यकार बनाना चाहते है, अल्बर्ट किशन मन्सूर उसे सांस्कृतिक मंडल का नेता बनाने का प्रयत्न करता है और ज्ञानेश्वर राव राजनीतिक वातावरण में लानेका वादा करता है । इन पाँचो व्यक्तियों के अश्वासनों एवं सहानुभूति का प्रभाव रानी मानकुमारी पर बहुत गहरा पड़ जाता है, जिससे उसका मन जीवन के परिवर्तन के पूर्वाभास में तडपने लगता है ।

पाँचों व्यक्ति के संपर्क में आने से रानी मानकुमारी में जो परिवर्तन होता है उसे देखकर उसके ससूर मेजर नाहरसिंह भी उसे उत्साहित करने का प्रयास करते है । नाहरसिंह ने पूरा युग देखा था । अतः उनकी यह राय है कि इन सभी व्यक्तियों की यह स्वाभाविक प्रक्रिया है, जिसमें वे पिसते जा रहे है । इसलिए वे विश्वास के साथ कहते है कि इन पाँचों व्यक्तियों के सपने कभी पूरे नहीं होंगे ।

अनुभव संपन्न नाहरसिंह को यह अभास होने लगता है कि मौत की भयानक परछाई उन सबके सामने मंडराने लगी है । रोहिणी नदी के मार्ग में पहाड गिरने के कारण रोहिणी का पानी अचानक कम हो गया था । इस स्थिति को वे अशुभ मानकर कहते भी है - "मैने शेर को हमला करते हुए देखा है, हमला करने से पहले वह ठीक इसी तरह सिमटता है ।" 50 किंतु अहंम की गर्तता में फँसे हुए पाँचों व्यक्ति नाहरसिंह के वक्तव्य का विश्वास नहीं करते हैं । उन सबमें अपनी बनाई योजना में कामयाब होने का पूरा विश्वास है । अतः वे फिर भी उसकी सफलता के लिए हरदम प्रयत्न करते रहते है ।

रानी मानकुमारी उन पाँचो व्यक्तियों को अपने जन्म दिन के अवसर पर निमंत्रित करती है । वहाँ वे पाँचो व्यक्ति अपनी योजना पर चर्चा करते है, और पूरे विश्वास के साथ सुमनपुर की ओर चल निकलते है । तभी अचानक वर्षा हो जाने से रोहिणी नदी का पानी बढ़ जाता है, और बीच में पहाड गिरने के कारण जो पानी रूका था, उससे वह कच्चा पहाड टूट जाता है, जिसके टूटने के कारण महानगर में भयानकसी बाढ आती है । पूरे महानगर में जलप्रलय हो जाता है । अतः इससे बचने के लिए सभी व्यक्ति प्रयत्न करते रहते है, किंतु उसमें वे सफल नहीं हो पाते है । रानी मानकुमारी और नाहरसिंह भी प्राण बचाने के लिए ऊँचे महल पर चढते है और जब पानी कम होता है, तब उनके मन में फिर से जीने की आशा पल्लवित होती है, किंतु अचानक भूकंप के धक्के के कारण वह राजमहल भी गिर जाता है । अंत में सबकुछ तबाह हो जाता है । यही पर उपन्यास समाप्त होता है ।

थके पाँव (1963)

सन 1963 में प्रकाशित 'थके पाँव' उपन्यास में भगवती बाबू ने निम्नमध्यमवर्गीय परिवार के माध्यम से मध्यवर्ग समाज का अत्यंत विषद चित्र खिंचा है । इस उपन्यास में शिक्षित समुदाय की बेकारी का चित्रण अत्यंत मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है । जिससे मध्यमवर्गीय परिवार की विवशता नजर आती है ।

वस्तुतः यह एक लघु उपन्यास है, किंतु फिर भी लेखक ने इसमें तीन पीढी के व्यक्तियों - रामचंद्र, केशव तथा मोहन के परिवार की कहानी चित्रित की है । ये तीनो परिवारिक व्यक्ति आर्थिक कुंठा से ग्रस्त है । एक ही कथा को बार-बार दोहराने से कथावस्तु में नाविन्य उभर नहीं पाया है । यह रचना करते समय खुद लेखक भी विवश था । इस सबन्ध में उन्होंने खुद लिखा भी है - "उसे मैंने कभी महत्व दिया ही नहीं । यह प्ले मैने 'थके पाँव' नाम से ही सन 1953 में लिखा था, किसी प्रेरणा से नहीं एक तरह से विवश होकर ।" [51]

इस उपन्यास की कथावस्तु का प्रारंभ होता है लगभग पचास वर्ष तक केवल संघर्ष के

कारण थके हुए केशवचंद्र के जीवन से । केशवचंद्र के पिता कानपुर के एंड्रज कंपनी में छोटे बाबू थे, जो महीना 50 रूपये पर काम करते थे । थोडीसी कमाई पर रामचंद्र चार बच्चों के साथ परिवार का उदरनिर्वाह करना बहुत कठिन महसूस होता है । उसी प्रकार केशवचंद्र को भी । अतः थका हुआ केशव तख्त पर लेटकर अपने विगत जीवन का मूल्यांकन कर रहा है । उसका समूचा जीवन एक भयानक विवशता की कहानी है । केशव को वह दिन याद आता है, जिस दिन उसने बी.ए. पास किया था । उस दिन उसने बड़े-बड़े सपने देखे थे किंतु घर की आर्थिक स्थिति के कारण उसको नौकरी करनी पडती है क्योंकि - उसकी बहन सुधा की शादी करनी थी और वह खुद भी विवाहीत था । दौड-धूप करके वह क्लर्क की नौकरी पाता है और अपने युवावस्था के सपनों को चूर-कर देता है । केशव के छोटे भाई रमेश और सुरेश घर की जिम्मेदारी उठाने के बजाय अपनी-अपनी राह बनाकर अलग रहने लगते है किंतु केशव को बड़ा होने के कारण परिवार की परवरिश करने की जिम्मेदारी को उठाना ही पड़ता है । अपनी बहन की सुधा की शादी बांकेलाल के पुत्र गोपिनाथ के साथ करने में केशव अपने पिता की सहायता करता है और अपनी जिम्मेदारी से मुक्त होता है ।

परिवार के खर्च से दबा हुआ केशव हर दम नई उम्मीद के साथ परिवार को उभरने का प्रयास करता है । उसके तीन बच्चे मोहन, किशन, भुवन तथा दो लडकियाँ माया और कमला, उसकी पत्नी माधुरी तथा मोहन की पत्नी सुशीला आदि पारिवारिक व्यक्तियों का आर्थिक बोझ ढोना केशव जैसे मामुली क्लर्क के लिए कठिन हो जाता है । उसका बड़ा लडका मोहन बी.ए. एल.एल.बी. पास तो है किंतु हर जगह पर प्रयत्न करने से भी उसे अच्छी नौकरी नहीं मिल पाती है । अतः वह भी अपने पिता की तरह क्लर्की करके परिवार के लिए अपना भी योगदान देने लगता है ।

केशवचंद्र यह अच्छी तरह से जानता है कि "जीवन एक अनवरत संघर्ष है, उस संघर्ष का खुद उसको एक लंबा अनुभव है, और इस संघर्ष का अंत है, मृत्यु जो असफलता और निराशा का

प्रतीक है ।" [52] एक ओर केशवचंद्र तथा उसका बड़ा लडका मोहन इस संघर्ष के साथ जूझते हैं, तो दूसरी ओर उसका छोटा लडका किशन फक्कड़ स्वभाव का रंगीन मिजाजी है । अतः किशन अपने जीवन संबन्धी व्यवहारिक दृष्टिकोण अपनाकर बंबई जाकर अभिनेता बनने का प्रयत्न करता रहता है । वह पैसे भेजने का मात्र अश्वासन देता है ।

इधर केशव और मोहन माया के विवाह के कारण चिंताग्रस्त हो जाते है । केशव की बहन सुधा ने उसके दूर के भतीजे जो विधूर डॉक्टर है, उसके साथ माया के विवाह संबन्धी बात की थी, किंतु आधुनिक संस्कार युक्त माया इस प्रस्ताव को "मैं जानवर नहीं हूँ कि जिसके साथ चाहा बाँध दिया, मैं संपत्ति नहीं हूँ कि जिसे चाहा उसे दे दिया ।" [53] कहकर ठुकरा देती है और अपने भाई किशन की तरह वह भी एक दिन अपने माँ, बाप को बीना बताके बंबई में फिल्मों में काम करने के लिए चली जाती है ।

आर्थिक संघर्ष को मिटाने के हेतु रात दिन मेहनत करने के परिणामस्वरूप मोहन को टी.बी. की बीमारी जकड़ लेती है । महत प्रयात करने के बाद मोहन ठीक हो जाता है किंतु बीमारी में जादह खर्च होने से उनकी आर्थिक दशा और अधिक बिगड़ जाती है । अतः पूरी जिंदगी नेक और ईमानदारी से जीने वाले केशवचंद्र को मोहन की बीमारी के कारण एक हजार रूपयों की रिश्वत लेने के साथ समझौता करना पड़ा था । इससे केशव का मानसिक संतुलन उसे चैन से जीने नहीं देता है । अतः इस बोझ से छुटकारा पाने के हेतु वह अपने मैनेजर को साफ-साफ कह देता है और उस नौकरी का त्यागपत्र दे-देता है । कर्ज तथा रिश्वत का बोझ ढोने से थका हुआ केशव पर घर आता है, तब अचानक बंबई से रजिस्ट्री आती है । उसपर दस्तखत करके वह उसे छुडा लेता है । माया ने उसमें एक पत्र के साथ पंद्रह सौ रूपये भेज दिए थे । रूपये पाते ही केशवचंद्र की आँखे भर आती है । वह बल लगाकर खडा हो जाता है और रिश्वत के एक हजार रूपये अनाथालय में जमा करने के लिए उसकी ओर जाने लगता है । उस समय उसका मन हल्का हो जाता है, किंतु उसके पैर लडखडाते ही रहते है । उसे अब भी थकावट महसूस होती रहती है । "क्या वह थाकवट दूर होगी ?" यह प्रश्नचिन्ह उसके सामने उभरता है और यहीं पर उपन्यास समाप्त होता है ।

संदर्भ सूची

	लेखक	पुस्तक का नाम एवं संस्करण	पृष्ठ क्रमांक
1.	डॉ. त्रिभूवन सिंह	हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय सी 31/30 पिशाचमोचन वाराणसी - 1 चतुर्थ संस्करण 2022 वि.	31
2.	डॉ. हजारीप्रसाद व्दिवेदी	हिन्दी साहित्यकी भूमिका राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. दिल्ली-6 आठवाँ संस्करण 1969 वही,	132
3.	डॉ. हजारीप्रसाद व्दिवेदी	हिन्दी साहित्यकी भूमिका राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. दिल्ली-6 आठवाँ संस्करण 1969	133
4.	डॉ.बैजनाथ प्रसाद शुक्ल	वर्माजीसे वार्तालाप भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासोंमें युगचेतना प्रेम प्रकाशन मंदिर, दिल्ली प्रथम संस्करण 1977	31
5.	भगवतीचरण वर्मा	आखिरी दाँव राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली-6 नया संस्करण 1991	21
6.	भगवतीचरण वर्मा	टेढ़े मेढ़े रास्ते भारती भंडार, इलाहाबाद षष्ठम संस्करण 1972	129
7.	भगवतीचरण वर्मा	भूले बिसरे चित्र राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. दिल्ली-6 चतुर्थ संस्करण 1966	394
8.	भगवतीचरण वर्मा	अपने खिलौने राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली संस्करण 1987	75, 76

	लेखक	पुस्तक का नाम एवं संस्करण	पृष्ठ क्रमांक
9.	भगवतीचरण वर्मा	सीधी सच्ची बातें राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली चतुर्थ संस्करण 1975	28
10.	भगवतीचरण वर्मा	भूले बिसरे चित्र	480
11.	आशा बागड़ी	हिन्दी उपन्यासो में पारिवारिक जीवन शोध प्रबन्ध प्रकाशन, दिल्ली-7 संस्करण 1974	198
12.	भगवतीचरण वर्मा	भूले बिसरे चित्र	10
13.	भगवतीचरण वर्मा	थके पाँव स्टार पब्लिकेशन प्रा.लि. दिल्ली पाकेट संस्करण 1969	101
14.	भगवतीचरण वर्मा	तीन वर्ष भारती भांडार, इलाहाबाद पाँचवाँ संस्करण 2010 वि	54
15.	भगवतीचरण वर्मा	चित्रलेखा भारती भंडार, इलाहाबाद 29 वी संस्करण 1989	145
16.	भगवतीचरण वर्मा	भूले बिसरे चित्र	624
17.	भगवतीचरण वर्मा	थके पाँव	100
18.	भगवतीचरण वर्मा	भूले बिसरे चित्र	111
19.	भगवतीचरण वर्मा	सामर्थ्य और सीमा राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., दिल्ली पंचम संस्करण 1975	138

	लेखक	पुस्तक का नाम एवं संस्करण	पृष्ठ क्रमांक
20.	भगवतीचरण वर्मा	रेखा राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली तृतीय संस्करण 1970	346
21.	भगवतीचरण वर्मा	चित्रलेखा	175
22.	भगवतीचरण वर्मा	तीन वर्ष	54
23.	भगवतीचरण वर्मा	तीन वर्ष	138
24.	भगवतीचरण वर्मा	तीन वर्ष	254
25.	भगवतीचरण वर्मा	तीन वर्ष	255
26.	भगवतीचरण वर्मा	आखिरी दाँव	5
27.	भगवतीचरण वर्मा	आखिरी दाँव	24
28.	भगवतीचरण वर्मा	ऑखिरी दाँव	27
29.	भगवतीचरण वर्मा	आखिरी दाँव	99
30.	भगवतीचरण वर्मा	आखिरी दाँव	194
31.	भगवतीचरण वर्मा	आखिरी दाँव	194
32.	भगवतीचरण वर्मा	अपने खिलौने	6, 7
33.	भगवतीचरण वर्मा	अपने खिलौने	43
34.	भगवतीचरण वर्मा	अपने खिलौने	49
35.	भगवतीचरण वर्मा	अपने खिलौने	69
36.	भगवतीचरण वर्मा	अपने खिलौने	175
37.	डॉ. प्रतापनारायण टंडन	हिन्दी उपन्यास का परिचायक, इतिहास विवेक प्रकाशन, अमिनाबाद, लखनऊ प्रथम संस्करण 1967	385

	लेखक	पुस्तक का नाम एवं संस्करण	पृष्ठ क्रमांक
38.	डॉ. शांतिस्वरुप गुप्त	हिन्दी उपन्यास महाकाव्य के स्वर अशोक प्रकाशन, दिल्ली संस्करण 1978	59
39.	भगवतीचरण वर्मा	भूले बिसरे चित्र	44, 45
40.	भगवतीचरण वर्मा	भूले बिसरे चित्र	58
41.	भगवतीचरण वर्मा	भूले बिसरे चित्र	65
42.	भगवतीचरण वर्मा	भूले बिसरे चित्र	83
43.	भगवतीचरण वर्मा	भूले बिसरे चित्र	137
44.	भगवतीचरण वर्मा	भूले बिसरे चित्र	535
45.	भगवतीचरण वर्मा	भूले बिसरे चित्र	555
46.	भगवतीचरण वर्मा	भूले बिसरे चित्र	712
47.	भगवतीचरण वर्मा	भूले बिसरे चित्र	712
48.	भगवतीचरण वर्मा	भूले बिसरे चित्र	712
49.	डॉ.प्रतापनारायण टंडन	हिन्दी उपन्यास का परिचायक इतिहास	390
50.	भगवतीचरण वर्मा	सामर्थ्य और सीमा	98
51.	डॉ. कुसुम वार्ष्णेय	परिशिष्ट-2 वर्माजी के पत्र से चित्रलेखा से सबहिं नचावत रामगोसाई तक साहित्य भवन प्रा.लि., इलाहाबाद प्रथम संस्करण 1968	219
52.	भगवतीचरण वर्मा	थके पाँव	43
53.	भगवतीचरण वर्मा	थके पाँव	104